आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 3 | अंक 09 | उदयपुर मंगलवार 15 मई 2018 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

लोकशक्ति के प्रतीक नारे

- डॉ. मालती शर्मा -

नारे और नारेबाजी, जन-मन को प्रभावित करने का एक अत्यन्त सशक्त नुस्खा है, माध्यम है, एक रचना-विधा है। यों भी उक्ति, लोकोक्ति और मुहावरे सुभाषित किसी भी भाषा की प्राण-शक्ति होते हैं। आज के उपभोक्तावादी युग में तो हर नई वस्तु में बाजार में आने के साथ नये नारे जन्म लेते हैं। विज्ञापनों की दुनियां बिना नारों के गूंगी है। निष्प्रभ है, प्रभावहीन है। ये 'स्लोगन' वास्तव में स्लो नहीं, 'गन' हैं। गन के धमाके की तरह किसी भी बात-विचार को वातावरण में फैला देते हैं। विज्ञापनों के नारे पूरा एक अलग विषय है।

नारे किसी बात, किसी विशेष विचार की उद्घोषणा के लिए बनते हैं और ये किसी भी आन्दोलन के प्रचार-प्रसार के अंगीभूत होते हैं। जैसे किसी समय परिवार नियोजन के लिए बना दीवारों पर लिखा जाता नारा - 'हम दो, हमारे दो' है और तिकाने जिस नारे का चित्रात्मक रूप है। बिना नारों के कोई आन्दोलन खड़ा नहीं हो सकता। जन-समर्थन नहीं जुटा सकता।

नारों द्वारा हमारी किसी बात-विचार का जन-जन तक सम्प्रेषण सहज, बोधगम्य और प्रभावी होता है, क्योंकि जन-सामान्य को शीघ्र ही याद हो जाते हैं, उसकी जुबान पर चढ़ जाते हैं। ये प्रचार-प्रसार का हमेशा से सहज माध्यम बने हैं।

बहुत प्राचीन काल में जब किसी विशेष बात की घोषणा करनी होती थी तो उद्घोषणा के लिए 'डोंडी' पिटती थी जिसके साथ उद्घोषणा के रूप में कुछ घोष वाक्य नारे जैसे रहते थे। संस्कृत के 'सुभाषितों' नीति कथनों से भी नारों का काम लिया जाता रहा है।

नारों का अत्यन्त प्रभावशाली और समृद्ध युग हमारा स्वतंत्रता संग्राम का कालखण्ड रहा है जब भारतीय लोक-शक्ति ने एक स्वर से अंग्रेजों को देश छोड़ने के लिए ललकारा था और जनशक्ति के देशभर में गूंजते 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' नारे की शक्ति के आगे अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर विवश होना पड़ा था।

आजादी की लड़ाई में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' का नारा दिया तो नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने आजादी की कीमत रक्त के रूप में मांगी थी। 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा।' स्वतंत्रता संग्राम के नारों के साथ बहुत से सेनानियों के नाम जन-मन में अंकित हुए थे।

स्वतंत्रता संग्राम के हमारे तप:पूत नेता अपने जनहितकारी और देशभक्तिपूर्ण कार्यों के आयोजनों को आजादी के बाद भी प्रभावपूर्ण नारे देते रहे। जवाहरलाल नेहरु ने निरन्तर सक्रिय रहने के लिए 'आराम हराम है' का नारा दिया तो लालबहादुर शास्त्री ने भारत-पाकिस्तान युद्ध की कठिन घड़ियों में 'जय जवान, जय किसान' का नारा देकर देश की जनशक्ति का, उसके मन की भावनाओं को दो मोर्चों पर सजग रह कर जवानों और किसानों का सम्बल बने रहने का आह्वान किया था। इन्दिरा गांधी ने 'गरीबी हटाओ' का नारा दिया तो विनोबा भावे ने 'निज पर शासन फिर अनुशासन' नारा देकर जनता और जन नेताओं को अनुशासन और शासन का मूल मंत्र दिया। हमारे सन्तों, महात्माओं, ज्ञानियों एवं कवियों के दिये घोष वाक्यों से हमारा जनमानस आज भी परिचालित है, शक्ति सम्पन्न है।

उपर्युक्त नारे लोकनायकों, नेताओं की ओर से आए और जन-मन पर छाए पर लोकशक्ति भी अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति नारों में करने से तनिक भी पीछे नहीं रही। देश पर इन्दिरा गांधी के आपातकाल में बलात् परिवार नियोजन जनता पर लादने पर लोक ने नारा दिया था- 'इन्दिरा हटाओ, इन्द्री बचाओ।'

हमारे समाज के चतुर्थ वर्ण का आक्रोश इस नारे में फूटा है- 'तिलक, तराजू और तलवार, इनको मारो जूते चार।' किसी समय उत्तरप्रदेश में राजनेताओं के चरित्र पर आपेक्ष रूप में ये नारे गूंजा करते थे- 'यू. पी. के तीन चोर, सम्पू, गुप्ता, जुगल किशोर।' 'जगन्नाथ के तीन हाथ।'

नारों की भाषा प्रतीकों से शक्ति पाती है। यह समाज के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तीनों वर्णों के विरूद्ध आक्रोश के नारे से स्पष्ट है। तिलक, तराजू और तलवार तीन वर्णों के व्यवसाय की पहचान के चिन्हों से यह नारा बना है। तीनों वर्णों का स्पष्ट नाम का उल्लेख इस नारे में नहीं है और प्रतीक में आये शब्द उस वर्ण का उसके व्यक्तित्व का पूरा चित्र अंकित कर देते हैं।

अपने कुछ शब्दों में, थोड़े में, बहुत कुछ कह देना, नारों की प्रभावशीलता का रहस्य भी है। संगीतात्मक वर्ण योजना जैसे 'जय जवान, जय किसान', इन्हें गेय बना याद रखने में सहायक होती है और अन्त में इस आलेख की समाप्ति देश की बहुत सी समस्याओं का हल, अपने एक नारे से करती हूं- 'तुम मुझे एक नागरी लिपि दो, मैं तुम्हें देश की एकता दूंगी।'

बच्चों को बस्ते का बोझ नहीं, ज्ञान का रोज दें

- डॉ. तुक्तक भानावत -

अब यह आवाज हर कोने से उठाई जा रही है कि बच्चों पर बस्ते का इतना बोझ न लादें कि उनकी कमर टेढ़ी हो जाय। इसकी जिम्मेदारी अभिभावकों पर मढ़ने से समस्या का निराकरण नहीं होगा बल्कि शिक्षक अपने ऊपर यह दायित्व लें। पहले हर शनिवार को साप्ताहिक सभा होती जिसमें बालक बड़े उत्साह से बढ़चढ़ कर भाग लेता।

अपनी कल्पनाशीलता के रचाव से कभी कविता, कभी कहानी, कभी चुटकुला सुनाकर सभी का रस रंजन करता। कभी नाटिका का प्रदर्शन होता। कभी अन्त्याक्षरी का तो कभी वाद-विवाद का आयोजन होता। समय-समय पर इनकी प्रतियोगिताएं होतीं और होशियार बच्चों को पुरस्कृत किया जाता। बच्चों को रुचि के अनुसार खेलकूद के भी अवसर प्रदान किये जाने चाहियें लकिन सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष उनके मूल्यांकन के लिए प्लेटफार्म हो जहां उनकी प्रतिभा का विकासमूलक आकलन हो सके।

इसके लिए वार्षिक पत्रिका निकाली जाय। बजट न हो तो प्रारम्भ में हस्तलिखित पत्रिका निकाली जाय। इसमें बच्चों की बहुमुखी प्रतिभा का दरसाव हो। उनकी रचनाशीलता के साथ-साथ उनकी हस्तलिपि, उनके द्वारा निर्मित चित्रफलकों से पत्रिका को अधिकाधिक सुहावनी, सौम्य तथा सुदर्शनीय बनाई जा सकती है।

स्कूल मेगजीन में गांव तथा आसपास के महत्वपूर्ण क्षेत्रों, भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा वैशिष्ट्यमूलक उपलब्धि का हाल देकर जानकारी का विस्तार किया जा सकता है। कोई विशिष्ट विभूति, शिल्पकार, गायक, नर्तक, बहरूपिया, कलाकार आदि का परिचय भी उसमें समाविष्ट किया जाय। किसी विशिष्ट जाति के बाहुल्य और उसके द्वारा किये जा रहे महत्वपूर्ण कार्य के बारे में भी जानकारी दी जानी चाहिये। इस कार्य में बच्चे हाथ बंटायें ताकि उनकी बौद्धिक क्षमता के साथ-साथ खोजक दृष्टि की परिपक्वता बढ़े। ऐसे एक नहीं अनेक रंग हैं। शिक्षक और बच्चों की जिज्ञासा से और अनेक वे पक्ष उद्घाटित हो सकते हैं जिनकी किसी को भनक और कल्पना तक नहीं है।

एक योग्य, कुशल तथा कुशाग्र शिक्षक को यह बागडोर संभालनी होगी। सभी बच्चे पढ़ाई में अव्वल नहीं होते। उनमें निहित अन्य स्तरीय विशेषता की पहचान शिक्षक को करनी होगी। उसे ही बालक को प्रेरित करना होगा और समझदारीपूर्वक उसकी प्रतिभा-प्रदर्शन के लिए आधारभूमि तैयार करनी होगी।

एक स्कूल में राज्यस्तरीय कविता प्रतियोगिता हुई। शिक्षक ने अपनी कक्षा के एक होनहार बालक को उस प्रतियोगिता में भेजने के लिए हेडमास्टर को कहा किन्तु उसने मना कर दिया तब भी शिक्षक निराश नहीं हुआ और उसने अपने खर्चे से उस बालक को भेजा जहां वह प्रथम आया। इससे स्कूल का नाम तो रोशन हुआ ही, हेडमास्टर को भी कम वाहवाही नहीं मिली और पूरे गांव तथा चौखले में उस बाल कवि की स्थायी पहचान बनी। सम्बन्धित शिक्षक को तो सबकुछ मिल गया। उसके बाद ऊंची शिक्षा प्राप्त करने के लिए उस बालक को कई अच्छे खासे नामचीन गुरु मिले किन्तु वह बालक अपने बचपन में पढ़ाये उन गुरुजी का ही नाम प्रतिष्ठित करता रहा जिन्होंने उसे अपने बच्चे से भी अधिक गर्वोक्ति दी।

जब बड़ी क्लास का विदाई समारोह होता है तब उससे छोटी क्लास के विद्यार्थियों को अपनी भावनाएं व्यक्त करने का उन्मुक्त अवसर दें। सबको भेंट स्वरूप कुछ ऐसा उपहार दें जो बच्चों की क्षमता लायक हो। हर विदा होते बच्चे को कागज पर उसकी क्षमता विशेष की मूल्यांकनपरक पंक्तियां लिखकर दें जो आजीवन उसकी स्मृति में बनी रहें। स्कूल से निकले होनहार बच्चों को आमंत्रित कर उनका अभिनंदन करते हुए उन्हें बच्चों के साथ मुखातिब करने से भी कई बच्चे कई तरह से प्रेरित बन लाभान्वित हो सकते हैं। ऐसे धनी छात्रों से अर्थ सहयोग भी जुटाया जा सकता है।

वर्षभर में कितने ही त्यौहार-उत्सव मनाये जाते हैं। अपने घरों में बच्चे उनमें शरीक होते हैं। उनकी माताएं आए दिन कोई न कोई व्रत-अनुष्ठान करती रहती हैं। ब्याव-शादियों में कई तरह के गीत तथा मनोरंजक प्रहसन होते हैं। व्रतोत्सव पर कई तरह की शिक्षाप्रद कहानियां कही जाती हैं जो बाजवक्त पाठ्यक्रम में दिये पाठों से भी अधिक सीख वाली होती हैं। एक शिक्षक बच्चों से इनका संग्रह करवाकर उसके सार रूप का अनेक प्रकार से उपयोग कर सकता है। प्रतिदिन घटित हो रही घटनाओं में से सकारात्मक उपयोगी तथा प्रेरक घटनाओं को दर्शित करने के लिए स्कूल में किसी निश्चित जगह उनका दरसाव हो ताकि हर बच्चा उन्हें पढ़कर अपने आसपास तथा देश-दुनियां की खबरों से रू-ब-रू हो सके।

सत्र के दौरान अधिक नहीं तो भी दो-तीन बार आसपास के महत्वपूर्ण स्थानों की यात्रा कर उन्हें तत्सम्बन्धी जानकारी से अवगत कराया जाय। कई बार बड़े होने पर भी अपने अंचल के महत्व और माहात्म्य से वे परिचित नहीं हो पाते हैं। ऐसी स्थिति में उनके जीवन में दीया तले अंधेरे वाली कहावत चरितार्थ न हो।

स्कूल प्रबन्धन को चाहिये कि वह अपने विशिष्ट आयोजनों में अभिभावकों के साथ-साथ गांव वालों को भी जोड़े। उनके समक्ष पढ़ाये जाने वाले बालकों की प्रतिभा-प्रज्ञा को प्रस्तुत कर शाला में उनके योगदान को रेखांकित करे। पहले गांवों में कबूतर के दाने के लिए एक पेटीदार पेटी लिए घूमा करता था। विशेष अवसरों पर बालक गुल्लक घुमायें। ज्ञान की इस यज्ञशाला में एक-एक सिक्के की आहूति लें। दानवीर को मंचासीन करें।

धीरे-धीरे बाल-प्रतिभाओं से ज्ञान-गंगा के प्रवाह की तरह धन-गंगा सबको धन्य करती मिलेगी। इससे शिक्षक तथा बच्चों को सृजन-सुख की प्राप्ति होगी वहीं ग्राम्यजन अपने अर्थ सहयोग की अपनी जिम्मेदारी पूरी कर प्रतिष्ठा अर्जन करते उदाहरण बनते फूले समायेंगे। फिर देखें बालक का बोझ हल्का होगा और वह फूले हुए फुलके की तरह फूला-फूला नजर आयेगा। उसके फूल बनने पर शिक्षक उस फूल में सुगंध भरने का कमाल करेंगे।

स्मृतियों के शिखर (52) : डॉ. महेन्द्र भानावत

बावजी चतुरसिंहजी द्वारा सम्बोधित उदिया से अनोखी भेंट

मेवाड़ का राजघराना कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण रहा। यहां केवल शूरवीर योद्धा ही नहीं हुए, साहित्य संगीत कला के उद्भट विद्वान् और रसिक शिरोमणि भी हुए। भक्ति और अध्यात्म के क्षेत्र में अपनी अतुलनीय पहुंच देने वाले साधक भी हुए तो देशभक्ति के लिए अपना सर्वस्व समर्पण कर देने वाले आन-बान के धनी प्रणवीर भी हुए।

उसी कड़ी में करजाली ठिकाने के महाराज बावजी चतुरसिंहजी हुए जिन्होंने मेवाड़ी जनजीवन में व्याप्त जीवनधर्मिता पर जो सहज ओपता साहित्य लिखा वह सबका अंगीरस बन गया। बावजी ने जन-जन में भक्ति की, रीति की, नीति की, धर्म की, जीवन-व्यवहार की, लोकशिक्षण की, अच्छाइयों की, योग की, ईश्वर और आत्मा की अलख जगाई। इस अलख पर उन्होंने 'अलख पच्चीसी' ही रच डाली।

संवत् 1978 की पौषसुद तीज, रवि को बावजी ने ईश्वर-दर्शन किये। उसी दिन अपनी चर्या में रहने वाले ऊद्या (उदिया) को सम्बोधित कर अलख पच्चीसी की रचना हुई। इसका प्रत्येक दोहा प्रकृति, आत्मा, जीव, काल, ब्रह्म, निर्गुण, निरंजन के दर्शन के लख-अलख को अलंकृत करता मिलता है।

करजाली ठाकुर करणसिंहजी ने मुझे बताया कि बावजी चतुरसिंहजी की सादगी का असर जहां उन्होंने साधना की वहां आज भी देखने को मिलता है। डूंगला तहसील का फलासिया गांव उनकी जागीर में था। उससे जो भी हांसल प्राप्त होता, बावजी उससे काम चलाते। वे बहुत संयमी तथा सादगीपूर्ण जीवन जीते थे। नउवा में तो बच्चे भी उनके पास पढ़ने आते थे। एकबार हांसल के पैसे बच गये तो वहां प्रति परिवार एक व्यक्ति को गले में पहनने की चांदी की हांसली बनाकर दी जिस पर चतुरसिंह लिखा गया था। वह हांसली बावजी की अमूल्य देन के रूप में कुछ घरों में अब भी संभाल कर रखी हुई है। उन्होंने बताया कि बावजी जो भी लिखते उसे केलवा ठाकुर रामसिंहजी के पास भेजते। उनकी बहुत सारी हस्तलिखित रचनाएं डॉ. ओंकारसिंह राठौड़ के पास सुरक्षित हैं। उनकी संग्रह की हुई बहुत सारी पुस्तकें चित्तौड़ के चारभुजा मंदिर में भी सुरक्षित हैं।

मेवाड़ी में लिखी गीता पर बावजी की गंगाजली टीका बड़ी अनूठी कही जाती है। मानव मित्र रामचरित्र तथा परमार्थ विचार उनकी लिखी मेवाड़ी गद्य की उत्तम कृतियां हैं। मानव मित्र रामचरित्र में बावजी ने कई नई उद्भावनाएं दीं। जहां तुलसी और वाल्मीकि तक मौन रहे वहां उनसे आगे बढ़कर रामचरित्र को लोकमानसीय परिव्याप्ति दी। पंचवटी में कंचन मृग के संदर्भ में तो तुलसी मौन ही रहे। वाल्मीकि ने भी यही कहलाया कि यह मृग भरत-राम के अलावा सीता तथा उसकी सासुओं के लिए भी खासा मनोविनोद की वस्तु होगा पर बावजी इससे आगे बढ़ सीता से कहलाते हैं- 'यह हिरन मेरे हाथ लग जाय तो यहां मेरे लिए अच्छा मनोविनोद होगा पर अयोध्या में भी बहिनों को कहूंगी कि वन से तुम्हारे लिए यह मनोरंजन लाई हूं। इसे देखने तब बहुत सारे गांव के स्त्री-पुरुष भी आयेंगे।' यही नहीं, राजा जनक की रंगशाला का वर्णन करते समय तो जैसे उदयपुर के राजमहल, जनानी ड्योढ़ी, गणेश ड्योढ़ी, सूरज गोखड़ा आदि का मनोरम चित्र ही बड़े सजीव रूप में प्रतिबिम्बित हुआ लगता है।

बावजी का जन्म 9 फरवरी 1880 को हुआ। उनके पिता मेवाड़ महाराणा संग्रामसिंह (द्वितीय) के पुत्र बाघसिंह के वंशज सूरतसिंह तथा माता कृष्णकंवर थी। जयपुर के पास छापोली ठिकाने में उनका विवाह शेखावतजी के साथ हुआ। पिता सूरतसिंह अत्यन्त ही धर्मनिष्ठ और भक्तिभाव में लीन सद्वृत्तियों के धारक थे। चतुरसिंहजी में बचपन से ही अपने पिताश्री के गहरे संस्कार पड़े जो निरन्तर विकसित होते रहे। बावजी ने सभी धर्मों, सम्प्रदायों, सन्तों, भक्तों तथा सांख्य, वेदांत, न्याय और ईश्वर भक्ति विषयक साहित्य का मनन और मंथन किया। साथ ही काव्य सृजन में भी अपनी पैठ बनाये रखी।

चतुरसिंहजी ने छोटे-बड़े अठारह ग्रंथों की रचना की। काव्य के विविध रूपों में पंचक, बत्तीसी, अष्टक एवं चरित्र के अन्तर्गत उन्होंने हनुमत्पंचक, शेष चरित्र, समान बत्तीसी, तुही अष्टक की रचना की वहीं चतुर चिन्तामणि में हिन्दी, ब्रज एवं मेवाड़ी में दोहे तथा पद लिखे। समान बत्तीसी मूलत: गुमान बत्तीसी है जो अपने गुरु गुमानसिंहजी की महिमा में लिखी गई थी परन्तु गुमानसिंहजी ने इसे अपने लिए ठीक नहीं समझ गुमान की बजाय समान लिखने का सुझाव दिया फलस्वरूप प्रत्येक दोहे में यह सुधार कर लिया गया।

उन्नीस वर्ष की उम्र में बावजी का विवाह हुआ। विवाह के बाद उनकी धर्मपत्नी भी अधिक उम्र नहीं ले सकी। फिर उनकी एकमात्र पुत्री सायरकंवर का भी निधन हो गया फलत: उन्हें वैराग्य सा हो गया। तब उनकी वृत्तियां ईश्वरोन्मुखी ही अधिक हो गईं। धीरे-धीरे उनकी रुचि योगाभ्यास की ओर हुई तब वे नर्मदा के किनारे रह रहे कमल भारती नामक योगी के पास चले गये जिसने मेवाड़ के बाठरड़ा में रह रहे अभ्यस्त योगी गुमानसिंहजी से भेंट करने को कहा। बावजी ने तब गुमानसिंहजी को गुरु बनाया और उनसे राज राजेश्वर योग की शिक्षा ग्रहण की।

बाठरड़ा से लौटने पर बावजी ने उदयपुर से बाहर सुखेर गांव के पास पहाड़ी पर झोंपड़ी बनाई जहां उन्हें बड़ी शान्ति मिली। उन्होंने अपना सारा साहित्य विशेषकर मेवाड़ी में ही लिखा। बच्चों के लिए उन्होंने 'बालकां री वार' और 'बालकां री पोथी' लिखी।

उदिया उर्फ उदा डांगी बावजी चतुरसिंहजी का सेवादार था। इसे संबोधित कर बावजी ने अलख पचीसी की रचना की। बावजी के 25 दोहों के साथ उदिया भी अमर हो गया। 20 जुलाई 1979 को उदिया से मिलने प्रो. देवकर्णसिंह राठौड़ और डॉ. विश्वंभर व्यास के साथ मैं बावजी की साधना स्थली नउवा से लगे गांव बीजणवा पहुंचा। वहां हमने आठ-दस लोगों से भेंट की जिन्होंने बावजी का सान्निध्य लिया और उनके वहां जाकर पढ़ाई भी की।

उदिया ठेठ ग्रामीण प्रकृति के सीधे-सादे व्यक्ति लगे। उनसे मिल तनिक भी नहीं लगा कि ये भी बावजी के साथ रह ज्ञानी-ध्यानी बने हैं। डॉ. व्यास ने उनसे कहा भी कि बावजी ने आपको अलख पिछांण की बात कही पर अभी तो मनुष्य को मनुष्य पहचानें, इसकी जरूरत है। देवकर्णसिंहजी ने जब 'उदिया मनख पिछांण' कहा तो उदाजी के चेहरे पर मुस्कान छूट गई।

हमने उदाबा का ध्यान बावजी पर केंद्रित कर पूछना प्रारंभ किया। उन्होंने बताया कि बावजी नापतौल का खाते और नापतौल के ही सोते। दो समै भोजन करते। भोजन में मूंग की दाल और फुलके अरोगते। बहुत कम, नापतौल का ही बोलते। रात्रि को ध्यान लगाकर बैठे रहते। वे अपना कामधाम चुपचाप करते। नहीं चाहते कि कोई उनके संबंध में जाने। प्रचार-प्रसार से वे कोसों दूर रहते।

हम अपने विस्तारित नैनों से उदियाजी को देखते रहे वहीं कान उनकी मुख-मुद्रा से निकले शब्द सुनने को लगे रहे। उदाबा धीमे स्वर में वाणी देते बोले- 'बावजी जब कभी रेल से यात्रा करते तो टिकिट तो पहले दर्जे का लेते पर बैठते तीसरे दर्जे के डिब्बे में ताकि कोई यह न समझ ले कि बावजी कंजुसाई कर रहे हैं। वे घोड़े पर भी निकलते तो थोड़ी दूर जाकर पैदल चलने लगते। अपने कंधे पर अंगोछा रखते। मोटी बुनावट की ऊंची धोती और बगलबंडी पहनते। भगवान एकलिंगजी के प्रति उनके बड़े भाव थे। एकबार तो वे बिना जूते पहने पैदल ही उनके दरसन को निकल गये। पांवों में उदयपुर के मोचीवाड़े से वेचड़ मोची के हाथ की बनी पगरखियां पहनते जो पूरे दो वर्ष चलती। अपने सिर को मोड़ा करते। कड़कादरी रंग की उनकी दाढ़ी थी जो न सफेद न काली, सफेद-काली मिश्रित थी। अपने पास वे दो जोड़ी पोशाक से अधिक नहीं रखते।'

इतनी बातें बताते-बताते मुझे लगा कि उदाबा रंग में आए हैं। वे बोले- 'एक दिन मैंने बावजी से पूछा कि महात्मा गांधी कौन हैं तब बावजी बोले कि वे बहुत बड़े आदमी हैं। मैंने कहा कि आपसे बड़े तो कोई नहीं हैं तब उन्होंने मुझे धरज बंधाते समझाया कि असल में बड़े तो वे ही हैं। उन्होंने अपने देश की आजादी के लिए लंगोटी लगाई जबकि मैंने तो अपने लिए ही राजपरिवार छोड़ा। यदि उनका आंदोलन पूरा हो गया तो अपने को खेती करनी पड़ेगी।'

- शेष पृष्ठ सात पर

यात्रा : जहां बिराजते यमुना व शनि

-दिनेश रावत-

देवभूमि उत्तराखण्ड के दिव्यधाम सदियों से लोगों की आस्था एवं विश्वास के केन्द्र रहे हैं। सांसारिक मोह-माया में फंसा व्यक्ति, आत्मीक शान्ति की राह तलाशते हुए अन्तत: इसी क्षेत्र का रूख करता है। यहां पंचब्रदी, पंचकेदार, पंचप्रयाग तथा अनेकानेक देवी-देवताओं के दैवत्व से दैदीप्यमान, ऋषि-मुनियों के तपोबल से तरंगित, गंगा, यमुना, अलकनंदा मंदाकिनी, भागीरथी, भिलंगना जैसी सलीलाओं की सतत् प्रवाहमान अमृतमय जलधाराएं विद्यमान हैं। चार धामों की यात्रा का शुभारम्भ यहीं से यमुना और सूर्यकुण्ड की तप्त जलधारा में स्नान करने के साथ होता है। स्याना चट्टी, राना चट्टी, हनुमान चट्टी, नारद चट्टी से होते हुए जानकी चट्टी अन्तिम पड़ाव है, जहाँ तक तीर्थयात्री वाहनों से पहुंच सकते हैं। जानकी चट्टी से पांच किलोमीटर की एक खड़ी पगडंडी यमुना की उद्गम स्थली यमुनोत्री पहुंचाती है। दूसरा मार्ग खरसाली गाँव को मुड़ जाता है। जो मोटर मार्ग से जुड़ा है।

खरसाली गाँव के प्राचीन यमुना मन्दिर से अक्षय तृतीया के दिन यमुनोत्री धाम के लिए प्रस्थान किया जाता है। इस यात्रा के महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं माँ यमुना के भाई और लोकपूजीत शनि महाराज। यमुनोत्री धाम के कपाट अक्षय तृतीया से लेकर भईयादूज तक खुले रहते हैं। मान्यता है कि भईयादूज के दिन माँ यमुना भी अपने भाई शनि के आगमन की प्रतीक्षा में रहती है। इस प्रकार से यह भाई-बहिन के प्यार व स्नेह के पर्व की महत्ता में भी श्रीवृद्धि करता है।

खरसाली के एक छोर पर माँ यमुना का तो दूसरे छोर पर शनिदेव का मंदिर है। भईयादूज के दिन शनिदेव अपनी बहिन यमुना को यमुनोत्री से वापस खरसाली लेकर आते हैं और उसके कुछ ही दिनों बाद आने वाले मार्गशीर्ष माह में साधना में लीन हो जाते हैं अर्थात शनिदेव मन्दिर के कपाट भी बंद कर दिये जाते हैं। शनिदेव को लोकवासी 'सोमेश्वर' नाम से ही अभिहित करते हैं। सोमेश्वर मूलत: गीठ पट्टी के बारह गाँव के आराध्य देव हैं। इसलिए कपाटोद्घाटन के दिन अपने आराध्य ईष्ट का दर्शनपान करके खुद को कृतार्थ करने के लिए लोकवासियों में एक खासा उत्साह रहता है। यम, यमराज व धर्मराज के रूप में जीवों के शुभाशुभ कर्मो के फलों को देने वाले, यमी अर्थात यमुना नदी जीवों के उद्धार में लगी है। सूर्य पुत्र शनि नौ ग्रहों में प्रतिष्ठित है। तपती का विवाह सोमवंशी राजा संवरण से हुआ, जिनसे कुरूवंश के स्थापक राजर्षि कुरू का जन्म हुआ। इन्हीं से कौरवों की उत्पत्ति हुई। इन स्थानों की यात्रा से यात्री अपनी आस्था से लबालब हो धन्य होते हैं और उनमें यह प्रबल विश्वास बनता है कि उन्होंने न केवल अपना वर्तमान जीवन बपितु मृत्युपरान्त का भावी जीवन भी पुण्यशाली बनाया है।

सिर विहीन शरीर का कमाल

बिना मुण्ड के रुंड अर्थात् सिर बिना शरीर का जीवित रहकर कमाल दिखाना प्राय: सम्भव नहीं लगता किन्तु इस सृष्टि में कई लीलाएं ऐसी रही हैं जिनके बारे में सुनकर आश्चर्य होता है। विश्वास नहीं होता पर उन्हें नितान्त असत्य याकि गप्प भी नहीं माना जा सकता। यों सृष्टि के सम्बन्ध में ही विचार करें तो जो रहस्य हैं उनका खुलासा आज तक नहीं हुआ है और कभी होने वाला भी नहीं। इसीलिए भारत पूरे विश्व में अजूबा बना हुआ है।

कल्लाजी राठौड़ के सम्बन्ध में उनके मुण्ड बिना रुंड द्वारा दुश्मनों से युद्ध कर उन्हें चित्तौड़ से लेकर उदयपुर जिले के सलूम्बर के पास तक खदेड़ते हुए तलवार के घाट उतारना और प्यास लगने पर खेजड़ी के झरने से प्यास बुझाते हुए रुंड विसर्जन करने, मृत्युगामी होने की घटना जितनी अविश्वसनीय-सी लगती है उतनी ही विश्वास के पक्के दायरे पर खरी उतरती है जब वे लोकदेवता के रूप में जन-जन की समस्याओं, असाध्य रोगों का शमन करते हैं।

उनकी ज्ञान-गादी पर जब-जब भी मेरा जाना हुआ, सदैव ही नई-नई जानकारियों ने मुझे समृद्ध किया। पहली बार सुनने पर उनका कथन अजूबा तो लगा ही पर अविश्वसनीय कभी नहीं लगा। उन्होंने बताया कि सृष्टि-संचालन में कुल पांच देव-परिवार हैं- गणेश, शारदा, दुर्गा, भैरू तथा जोगणी। इनसे सैंकड़ों देवी-देवताओं का रचाव हुआ। दुर्गा से नवदुर्गा तथा भैरू से 52 भैरू का वंश बढ़ा।

सूरज अकेला तप रहा है। वह अकेला ही है। तारे प्रकाश दे रहे हैं। यह प्रकाश वे चांद से पा रहे हैं। वर्षा के लिए वरुण की पूजा की जाती है। आकाश ने सूरज को धोब रखा है। आकाश को कोई छींटा नहीं देता। पहली धूप अग्नि को लगती है। पाबूजी, कल्लाजी, भमरासा राठौड़ों के देवता हैं। तेजाजी जाटों में अधिक पूजित हैं। सीसोदियों में सगसजी की मानता चलती है।

रुंड यानी धड़ का महत्व भी कम नहीं है। जो शरीर अपने पर शीर्ष रूप में सिर को शोभित करता है वह तो महत्वपूर्ण है ही। उसी से सबकी पहचान बनी हुई है पर शरीर भी अपने ढंग से कभी-कभी ऐसा चमत्कार दिखाता है जो सबके लिए अकल्पनीय तथा हैरानी में डालने वाला होता है। यह चमत्कार कुछ समय का ही होता है। कुछ घटनाएं इस प्रकार हैं-

(1) मेवाड़ पर प्रसिद्ध योद्धा रणबाजखां ने (1711 ई.) चढ़ाई कर दी तब महाराणा ने रावत महासिंह को उसका मुकाबला करने का दायित्व सौंपा। युद्ध में रणबाजखां ने अपनी तलवार से महासिंह की गर्दन और बगल का धड़ काट दिया तब शरीर के शेष भाग से तत्काल महासिंह ने रणबाजखां की गर्दन और हाथी का सिर उड़ा दिया।

(2) महाराष्ट्र के नंदूरबार रेलवे स्टेशन पर मालगाड़ी के आगे कूदकर एक युवक ने खुदकुशी कर ली। इससे युवक का शरीर दो हिस्सों में बंट गया। मौके पर जब पुलिसकर्मी ने उसके धड़ को छुआ तभी युवक का धड़ हाथों का सहारा लेकर उठा और टूटते शब्दों में बोला- 'मैं मालीवाड़ा का संजू नंदूरबार का रहने वाला हूं।' यह कह उसने दम तोड़ दिया।

- दैनिक भास्कर, 6.3.2018

(3) अमेरिका के कोलोराडो शहर के फ्रुटा में प्रतिवर्ष मई माह में माइक द हैडलेस चिकन फेस्टीवल आयोजित किया जाता है। इस फेस्टीवल में एक फार्म में किसान ने एक मुर्गे का सिर काट दिया किन्तु वह मरा नहीं और अठारह माह तक जीवित रहा। यह घटना 10 सितम्बर 1945 की है। इस दौरान 50 से अधिक जानवरों को काटा गया पर केवल मुर्गा ही बिना सिर के जीवित रह इधर-उधर भागता देखा गया।

- दैनिक सायंकाल, 23.9.2015

बांस जलै, सांस जलै

मेवाड़ के आदिवासी इलाकों में भ्रमण के दौरान एक अति वृद्ध डोकरे ने तसल्ली से ज्ञान-गठरी खोलते हुए बहुत सारी चौंकाने वाली बातं कहीं जिन पर यकायक विश्वास करना मुश्किल पर वे अविश्वासी भी नहीं कही जा सकतीं। मसलन उसने एक कहावत कही- 'बांस जलै ज्यूं सांस जलै।' मैं इसे सुन चौंक गया। पूछने पर उसने बताया कि बासं जलने पर सांसें घटती हैं। उम्र कम होती है। पितर दोष लगता है इसलिए मरते वक्त उस दोष से बचने के लिए शव को बांस की बनी खटली पर ले जाया जाता है ताकि उसका जमारा सुधरे। यही खटली अर्थी कहलाती है। इसके कंधा देने वालों को भी पुण्य मिलता है। यही कारण है कि बनती कोशिश हर डागिया उस अर्थी को कंधा देकर अपने को भाग्यशाली समझता है।

हिन्दू शास्त्रों में भी बांस जलाना निषेध कहा गया है। धर्मस्थानों में अगरबत्ती का सर्वाधिक प्रयोग देखा जाता है। वहां के पुजारियों या उन भक्तों का अध्ययन किया गया जो प्राय: उस धुंए के शिकार होते हैं। वे अस्थमा, कैंसर, सर दर्द जैसी बीमारियों से ग्रसित रहते हैं। कहते हैं, पूजन विधान में कहीं भी अगरबत्ती का उल्लेख नहीं मिलता। वहां सब जगह धूप अथवा धूपबत्ती लिखा मिलता है। पंडित लोग भी इससे अनभिज्ञ लगते हैं इसीलिए वे अगरबत्ती लगाना नहीं भूलते।

ऐसा कहा जाता है कि पहले अगरबत्ती का प्रचलन नहीं था। इसका प्रयोग एक साजिश के तहत मुगलों ने किया। हिन्दू सैनिकों में युद्ध पूर्व पूजा-पाठ से अपने इस्ट देव को प्रसन्न करने के लिए धूप-दीप जलाने का प्रचलन था। औरंगजेब जैसे आक्रमणकारियों ने मन्दिर आदि नष्ट करने के साथ-साथ हिन्दू सैनिकों के शक्तिप्रदाता देवता को पारम्परिक पूजा-पाठ से वंचित कर अगरबत्ती की सुगंधित धूप से भगवान को प्रसन्न करने की सीख दी।

हिन्दू धर्म में बांस जलाने की मनाही है। पुराने लोगों में ऐसा दृढ़ विश्वास बना हुआ है कि बांस जलाने से वंश पर आघात पड़ता है। यह वैज्ञानिक रूप से भी सिद्ध हो चुका है कि बांस जलाने पर जो धुंआ फेंफड़ों से खून में मिलता है वह ऐसे तत्व छोड़ता है जिससे व्यक्ति की प्रजनन क्षमता कम होती हुई अन्त में उसे नामर्द तक बना देती है। अत: अगरबत्ती की बजाय गाय के गोबर में गूगल, घी, चंदन, कर्पूर आदि का मिश्रण कर गोलियां बनाकर उन्हें सूखाकर धूप-बत्ती के रूप में उपयोग करना चाहिये। गोशालाओं में गाय के गोबर में गोमूत्र, घी, भीमसेनी कर्पूर तथा नीम के फल, फूल, पत्ती आदि मिलाकर जो धूप-बत्ती तैयार की जाती है वह सर्वोत्तम, स्वास्थ्यवर्धक तथा वायु शुद्धिजनित श्रेष्ठतम धूप-बत्ती कही गई है।

गरबियों के गोरख पं. अक्षयकीर्ति व्यास

पंडित अक्षयकीर्ति व्यास गुजराती, ब्रज, हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषा के जानेमाने अधिकारी विद्वान थे। उन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम. ए. किया। वहां महामना मदनमोहन मालवीय, बाबू श्यामसुन्दर दास, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', लाला भगवानदीन का सान्निध्य पाकर कविता लिखने की प्रेरणा ली। बाबू जगन्नाथप्रसाद 'रत्नाकर' और हरिऔधजी ने कई कवि सम्मेलनों में अक्षयकीर्तिजी को अपने साथ ले जाकर मंच पर कविता साधने का कौशल दिया।

बनारस में आयोजित प्रताप जयंती पर लिखे दो छन्द सुनकर अन्य साहित्यकारों के साथ लाला भगवानदीन ने पंडितजी को 'प्रताप शतक' लिखने की प्रेरणा दी। फलस्वरूप उदयपुर आकर उन्होंने यह शतक पूरा किया। उनके पिता उदयपुर में महाराणा फतहसिंह से सम्बद्ध रहे।

पिता विष्णुराम शास्त्री बालक को पढ़ाना चाहते थे पर महाराणा पढ़ाई के पक्ष में नहीं थे। जब बिना महाराणा की इजाजत के पिता ने उन्हें बनारस भेज दिया तो महाराणा के समक्ष पेशी में विष्णुराम ने बहाना बनाया कि उनका पुत्र उनके कहने में नहीं था सो चला गया। इस पर महाराणा ने अक्षयकीर्ति को पिता की चल-अचल सम्पत्ति के हक से विमुख कर दिया। पिताजी बोले कि महाराणा बहुत वृद्ध हैं, अधिक दिन के नहीं हैं। मैं अपनी सम्पत्ति से विमुख नहीं कर रहा हूं। तुम जाओ और मन लगाकर अपनी पढ़ाई पूरी करो।

जब महाराणा भूपालसिंह गद्दी पर बैठे तब अक्षयकीर्ति को पुरातत्व विभाग में अधीक्षक नियुक्त किया। वहां रह विभिन्न प्रशस्तियों एवं ताम्रपत्रों, शिलालेखों का सम्पादन कर अक्षयकीर्ति ने मेवाड़ के इतिहास निर्धारण में बड़ी भूमिका दी। शिलालेख एवं पुरातात्विक स्थलों के अध्ययन के लिए पंडितजी ने अफगानिस्तान, तक्षशिला आदि की यात्राएं भी कीं। उनके इस कार्य को 1925 में भारत सरकार की ओर से प्रकाशित 'एप्रीग्राफिया इंडिका' में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया।

अपनी स्पष्टवादिता तथा सच्चाई के कारण पंडितजी राजकीय सेवा में भी अधिक समय नहीं रह सके और कुर्सी के लालची चाटुकारों से मुक्त होकर अपने सत्व और ईमान की स्वतंत्र रक्षा करने लगे। पंडितजी ने प्रताप शतक और कुछ-कुछ गुजराती गरबियों के अलावा छुटपुट समस्यापूर्ति के छन्द लिखे। उनका मानना था कि कविता लिखना आसान नहीं है। उसके लिए पूर्ण संयम एवं ब्रह्मचर्य की जरूरत होती है।

जब जगन्नाथ प्रसाद 'रत्नाकर' के अक्षयकीर्तिजी सम्पर्क में आये तो उनकी सम्पादित बिहारी सतसई की विशद टीका प्राप्त करना चाहते थे। खरीदने के लिए उनके पास पैसे नहीं थे अत: एक कवित्त लिखकर रत्नाकरजी के घर पहुंचे। कवित्त पढ़कर रत्नाकरजी ने तत्काल बिहारी रत्नाकर की प्रति मंगवाकर पंडितजी को भेंट की और आत्मीय स्नेह दिया। वह कवित्त इस प्रकार था-

कविता अनुरोग पायौ है कै धन-दीन-हीन
हार्‌यौ कै जतन ताहि कैसे बिराऊं मैं।
हाथ बिन मोल ही बिकानौ का बिहारी जू कै
बैबस है बानी जासु जीभ पै नचाऊं मैं।।
बाकी कल कविता सुकामिनी सजनवारे
राउरौ 'अखय' जस कैसे कै सुनाऊं मैं।
धाइ-धाइ आऊं पौरि हाथुन पसारि एक
प्यारी जो 'बिहारी रत्नाकर' प्रति पाऊं मैं।।

उदयपुर में पंडितजी के निवास पर मैंने तीन-चार बार उनसे भेंट की। वे जितने स्पष्ट, खरे और सच्चे थे उतने ही सहृदयी, मृदुभाषी तथा हंसमुखी थे। अपने घर आये व्यक्ति का वे बड़ा सम्मान करते और काव्य-धारा से रससिक्त कर माहौल को मौजी बना देते। मैंने उनके मुख से ब्रजभाषा में लिखे कई कवित्त और गुजराती में लिखी गरबियां सुनीं। उन्होंने बताया कि गरबियां तो उन्होंने कई लिखीं। सबकी सब जन कण्ठों पर चढ़ी हुई हैं।

पंडितजी के पास बैठकर कोई बोर नहीं होता। मस्तमौला फकीर की तरह बड़े रसिकी अन्दाज में वे कवित्त वर्षा करते। उनका कंठ बहुत मीठा था। गरबी हो, चाहे कवित्त वे एक-एक शब्द का स्पष्ट उच्चारण करते हुए बड़े तल्लीन होकर भावों में खो जाते।

मुझे कई बार लगा कि अच्छी रचना का सृजन ही काफी नहीं है। उसकी संरचना की सार्थकता तो उससे भी अधिक उसकी प्रस्तुति में है। किसी शब्द की शक्ति उसके उच्चरण जनित लय और ध्वनि धुन में है। जैसे हाथों की अंगुलियों से सवैयों के तार बुनते निकलते रहते हैं वैसे ही पंडित अक्षयकीर्ति के श्रीमुख से मैंने कवित्त और गरबियों की लावण्य लड़ियां निसृत हुई पाईं। गरबियों के तो वे गोरख ही थे।

अब कहां उन जैसे भाई भगवान

ऐसे कुछ-कई लोग हैं जो अपने मूल नाम से हटकर चर्चित कुछ और नाम से हुए हैं। उनमें एक नाम भाई भगवान का है। पिछले 40-45 वर्ष से मैं छोटों-बड़ों, सबसे उनका यही नाम सुनता आ रहा हूं। भाई भगवान स्वयं के लिए भी भगवानदास नही रहें। दस अगस्त 1922 को जन्मे भाई भगवान अपने निधन काल 10 नवम्बर 2005 तक कई रूपों में नजर आये मगर उनका सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष सामाजिक सरोकारों के प्रति समर्पण का अंत तक बना रहा।

भाई भगवान से पूर्व भाई का सम्बोधन उदयपुर में भाई साहब के रूप में डॉ. मोहनसिंह मेहता को लगा जो सबके अगुवा थे। जनुभाई के रूप में जनार्दनराय नागर चर्चित हुए। केसरीलाल बोर्दिया दादाभाई के नाम से जाने गये जबकि भाई भगवान सबके लिए सहज, स्नेहिल, सौम्य और सुखद बने रहे, जैसे थे वैसे वैसे। उनसे जो भी मिला, उसका मिलन एक ताजा याद और संसाधन बन गया।

विचारधारा से भाई भागवान समाजवादी थे। एक बार तो उन्होंने मोहनलाल सुखाड़ियाजी के विरोध में विधानसभा का चुनाव भी लड़ा। उन्होंने मजदूर आंदोलन का भी डटकर मुकाबला किया। राजस्थान विद्यापीठ में विभिन्न पदों पर उनकी सेवाएं कई दृष्टियों से मौलिक एवं मूल्यवान रहीं। जनता कॉलेज के प्राचार्य, लोकशिक्षण विभाग, कम्युनिटी सेंटर्स के निदेशक रहे। प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में अपनी बुलंदगियों के कारण यूनेस्को के निमंत्रण पर कामगारों की शिक्षा व्यवस्था के अध्ययनार्थ उन्होंने थाईलैंड, जापान, हांगकांग, अमेरिका, यूरोप, कनाडा का दौरा किया। 1989 में वे नेहरू लिटरेसी अवार्ड से नवाजे गये। भाई भागवान सबरंग सबरस के धनी थे। लोकरंगों में डूबकर उन्होंने भारतीय लोककला मंडल से अपना जुड़ाव बनाये रखा वहीं शास्त्रीय संगीत और नृत्य के आनंदानुभव बटोरने में महाराणा कुंभा संगीत परिषद ने उनको आकंठ जोड़े रखा। प्रताप स्मारक के वरण्य सदस्य के रूप में उन्होंने राष्ट्रीय फलक पर महाराणा प्रताप के तेजोमय चरित्र को बहादुरी के साथ यशमंडित किया।

राजस्थान महिला विद्यालय के सचिव पद पर रहते भाई भगवान ने शिक्षा का डंका ही नहीं बजाया, साहित्य के सवालों और सरोकारों को भी 'पाण' दिये रखा। नंद बाबू ,नवल किशोर, पूनम दईया, भगवतीलाल व्यास, किशन दाधीच, रजनी कुलश्रेष्ठ, अजरा नूर, आलमशाह, उषा किरण आदि कई साहित्यिक मित्रों ने ख्यात-प्रख्यात कलमकारों का सान्निध्य पाया। कई संगोष्ठियां याद आ रही हैं जो भाई भगवान ने अपने सजेधजे कक्ष में आयोजित कीं। उनके द्वारा साहित्यकारों के प्रति उमड़ता स्नेह, आत्मीयता, वैचारिक सौजन्य तथा खातिरदारी ने सबको छकित किये रखा। भाई भगवान अपनी बंटदार नुकीली मूछों के लिए भी जाने गये। ऐसी ही मूछें इतिहासवेत्ता टेस्सिटोरी की थीं, स्मार्ट चौकस और बिच्छू सी करवटी खाती हुई। अपनी छोटी दुनियां में एक बड़ी पहचान दी भाई भगवान ने। अब जब वे नहीं हैं तब भी हम सबके बीच उनकी पहचान हमें सुगंधित किये रहेगी जैसी इत्र की भीनी-भीनी खुशबू प्रतिदिन उन्हें सुगंधित किये रहती थी। वे सचमुच में भाग्यवान ही थे।

- म. भा.

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 15 मई 2018

सम्पादकीय

धर्म तुम्हारा ए नार

जब से नारी-सशक्तीकरण का बिगुल बजा है तब से नारी-आतंकीकरण का बढ़ता प्रवाह अत्यन्त चिन्ताजनक बना हुआ है। भारत जैसे देश में जहां सदैव से नारी-शक्ति पूज्या रही है वहां ऐसा होना बेशर्मी की हद होना है। नारियों के सम्बन्ध में कहे गये सारे आदर्श कथन इस कदर चूर होते देखे नहीं जाते। कवि सूरदास ने तो मात्र नारी को अपनी आंखों से अ-ठीक देख कर ही महापापी मान अपनी आंखें फोड़ली थीं।

गांवों में विवाह पर आज भी जब पुरानी चाल के नारी विषयक गीत सुनता हूं तो अचरज ही होता है- 'पति की सेवा करना ही तुम्हारा धर्म है। उसे पहले खिलाकर फिर खुद खाना। उसे नहलाने को गर्म पानी देना और अपने हाथों से उसकी पीठ को नहलाते-सहलाते उसका मैल उतारना' जैसे कथन पति को परमेश्वर सिद्ध करने में जरा भी कोताई नहीं करते।

शादी होने पर चंवरी में गाया जाता है-'धरम करो ओ म्हारा धरमी ओ दादासा, आई धरम री वेळां / देणो-लेणो चंवर्यां में दीजो, पछै झूठी वातां।' अर्थात् -नव परिणिता के मुंह से कहलाया जा रहा है जो कुछ देना हो, अभी दे दो, बाद में देने की बातें झूठी हैं और विदा के वक्त उसका अश्रु-रुदन देता कथन- 'म्हूं तो छोड़ बाबुल घर आपणो जाऊं पियाजी रे देश, संपत व्है तो लावजो नीं तो भळी परदेस'। अर्थात् हे पिता! आपका घर छोड़ सदैव के लिए अपने प्रीतम के घर जा रही हूं। घर में संप हो तो मुझे लेने आना नहीं तो परदेश ही भली।

और महिलाएं सास को भळावण देती हैं - 'ओ सासू गाळ मत दीजो। नाना जतन जापते से लड़की पली पोषी और बड़ी की है। यह हमारे आंगन की रमती शोभा है। बड़े लाड़ लड़ाये हैं इससे।'

हम कितनी ही बढ़-चढ़कर बातें करें, लड़की तो अन्ततोगत्वा पराई ही है। नई रोशनी वाली लड़कियों का नजारा ऐसा नहीं है। वे तो हंसती-मुस्कुराती, हाथ हिलाती फर्राटे से चली जा रही हैं, जो होगा सो देखा जाएगा मगर उस मुस्कान के भीतर भी एक दर्द की स्मित रेखा ही सही तो उसके अन्तस में रहती ही है। सच तो यह है कि जहां-जहां भी लड़कियां हैं वे हैं तो पराये घर की हीं।

एक नया घर बसाने वाली गृहस्थ जीवन की धुरी है लड़की। वह वंश वधावड़ है और यों ही नहीं आ गई है। न जाने कितने सुनहरे सुन्दर अनमोल स्वप्नों की थाल सजाकर, ढोल-नगाड़ों की साक्षी में हम उसे लाये हैं अपने लाड़ले के जीवन को सुखद उल्लासमय बनाने..... फिर यदि उसके साथ कोई अनुचित व्यवहार होता है तो क्या हम और समाज पाप के भागी नहीं हैं? चुल्लूभर पानी में डूब मरने का सबब नहीं है? क्या हमारे घरों में लड़कियां नहीं हैं?

मन्दिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों के इस देश में तो पाप का एक तिनका भी नहीं मिलना चाहिये। अब तक तो सारे पापी-आतंकी सब बाहर के थे। उन्हें हमने खदेड़ दिया और अब! क्या कोई जगह है जहां मुंह छिपा सकें!!

धर्माराधिका प्रेमबाई का निधन

प्रेमबाई मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री अमरसिंह मेहता का 88 वर्ष की उम्र में 2 मई को बड़ीसादड़ी में निधन हो गया। प्रेमबाई सरल स्वभाव की धर्मपरायण महिला थी। वह हमेशा धर्म की आराधना करती रहती थी। उनकी गौ सेवा, जीव दया के प्रति गहरी निष्ठा थी। उनकी चिता को उनके पुत्र नरेन्द्र एवं डॉ. सतीश मेहता ने मुखाग्नि दी।

अन्तिम यात्रा में नगर के गणमान्य व्यक्तियों के साथ उदयपुर, कानोड़, छोटीसादड़ी के सम्बन्धियों ने भी भाग लिया। इस अवसर पर परिवारजन गोविन्दसिंह, सूरजमल (देवर), विकल्प, कुलदीप, संदीप (पौत्र), शोबाक, निर्मला, सुमित्रा, गुणबाला, ललिता, पुष्पा (पुत्रियां), डॉ. कविता व निर्मला (पुत्रवधू), के. एस. नलवाया, कमला, डॉ. कहानी मेहता, शब्द रंजन के संस्थापक डॉ. महेन्द्र भानावत, जार अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत आदि उपस्थित थे। शोक सभा 3 मई को जैन स्थानक में रखी गई जिसमें अशोक दक, अमरसिंह नागौरी, पूर्व मंत्री साधुमार्गी जैन संघ, अध्यक्ष साधुमार्गी जैन संघ जीवन नागौरी ने विचार व्यक्त किये। **-अनिशा मेहता**

नरेन्द्र मोदी से दो कदम ईमानदार अपेक्षाएं

-भगवान अटलानी-

नरेन्द्र मोदी जब मई 2014 में भारत के प्रधानमंत्री बने तो मीडिया और भाषणों के माध्यम से उनकी वरीयताएं जगजाहिर थीं। अर्थनीति, विदेश नीति, पड़ोसी देशों से सम्बन्ध, विकास, जीवनपद्धति, गांव और गरीब इत्यादि के बारे में नरेन्द्र मोदी इतना कुछ कह चुके थे कि एक तूफान सा चलता प्रतीत होता था जो परिवर्तन की भूमिका बनकर उभरने वाला था।

यह परिवर्तन लाने की ईमानदार कोशिश उन्होंने सत्ता की बागडोर संभालते ही शुरू कर दी। सैकड़ों योजनायें केवल बनाईं या घोषित ही नहीं की गईं, उन्हें लागू करने की दिशा में भी पूरी ताकत से प्रयत्न हुए। प्रतीत होता था, प्रत्येक योजना नरेन्द्र मोदी की वरीयता है। नोटबन्दी, जीएसटी और सर्जीकल स्ट्राइक भले ही सर्वाधिक चर्चा में रहे हों किन्तु उनकी एक भी योजना कागज़ी नहीं थी। अपेक्षाएं उफान पर थीं इसलिये त्वरित परिणामों की मांग थी। निर्माण और बदलाव समय साध्य होते हैं। योजनाओं के नतीजे तुरन्त सामने आयें, यह सम्भव नहीं होता। चार साल गुजर जाने के बाद, नरेन्द्र मोदी से की गई आशाओं व अपेक्षाओं का ज्वार अनेक लोगों के मनोसमुद्र में भाटा बन चुका है।

ढूंढाड़ी के एक प्रसिद्ध लोक गीत का मुखड़ा कहावत का रूप ले चुका है, 'निकल गई गणगौर मोल्यो मोड़ो आयो रे।' नरेन्द्र मोदी के संदर्भ में, अभी गणगौर निकली नहीं है। केवल दो कदम यदि तुरन्त उठाये जायें तो संभव है कि जन-अपेक्षाओं को निराशा में बदलने से रोका जा सके। सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस टी.एस. ठाकुर पद पर रहते हुए दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में 24 अप्रैल 2016 को नरेन्द्र मोदी के सम्मुख मुकदमों के अम्बार पर चिन्ता व्यक्त करते हुए आंसू बहा चुके हैं। इस स्थिति को तुरन्त प्रभाव से बदलने की जरूरत है।

न्याय क्षेत्र में संघर्षरत् वकीलों की एक बड़ी तादाद है जिसके पास यथोचित संख्या में मुकद्मे नहीं हैं। दूसरी ओर वरिष्ठ व स्थापित वकील कई बार मुकदमों की अधिकता के कारण मुकदमों को लम्बा खींचने की जोड़ तोड़ करते हैं। यदि न्यायालय 365 दिन खुलते हैं या शिफ्टों में लगते हैं तो पुराने वकीलों के काम पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ेगा अपितु नये या संघर्षरत् वकीलों को रोजगार मिलेगा।

लोक सेवकों, सांसदों, विधायकों आदि को वेतन, भत्तों, पेंशन, चिकित्सा, बिजली, यात्रा, इन्कम टैक्स में छूट जैसी विपुल सुविधायें जनमानस को उद्वेलित करती हैं। शैक्षणिक योग्यता व आयु जैसी बाध्यताओं के अभाव के बावजूद लोकसेवकों को करदाताओं के ऊपर लादने की प्रवृत्ति दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। संसद की कैन्टीन में खान पान की सामग्री की दरें चौंकाती हैं। एक रुपये की रूमाली रोटी और इक्यावन रुपये की चिकन बिरियानी कैन्टीन में मिलने वाली 102 तैयार व लजीज खाद्य वस्तुओं की न्यूनतम व अधिकतम दरें हैं। वहां सामिष भोजन मात्र तेंतीस रुपये में किया जा सकता है। यही स्थिति विधानसभाओं में है। इन व्यवस्थाओं को तुरन्त प्रभाव से बदलने की जरूरत है।

जब प्रधानमंत्री वरिष्ठ नागरिकों को रेलयात्रा में रियायत लेने से स्वैच्छिक इन्कार का आग्रह करते हैं तो लोकसेवकों को खुले हाथ दी जाने वाली सुविधाओं की पृष्ठभूमि में मजाक लगती है। इसी तरह जब नरेन्द्र मोदी गैस सबिस्डी छोड़ने का आह्वान करते हैं तो लगता है, जरूरतमंद को देशहित का पाठ पढ़ाते हुए त्याग के नाम पर उनकी जेब से छोटी-छोटी रकम निकालकर वे करोड़ व अरबपति सांसदों-विधायकों की रुपयों से लबालब भर जेबों में डाल रहे हैं। कथनी और व्यवहार का यह अन्तर खोखला महसूस होने लगता है। प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने स्वयं सोमवार का उपवास प्रारंभ करके देश को सप्ताह में एक दिन अन्न बचाने के लिये कहा था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान का प्रभाव व्यवहार में विसंगति के कारण कमतर हो जाता है।

कहा जा सकता है कि सुविधाएं आदि छीनते ही सांसद, विधायक बागी हो जायेंगे। सरकार गिर जायेगी। जब नोटबंदी, जीएसटी व सर्जीकल स्ट्राइक जैसे साहसिक कदम नरेन्द्र मोदी उठा सकते हैं तो यह काम भी करके देखें। सरकार गिरती है तो गिरने दें। इस कारण यदि दोबारा चुनाव होंगे तो जनता उन्हें ज्यादा सीटें देकर जितायेगी। राजनीतिक गुणा भाग अपनी जगह, नरेन्द्र मोदी का कार्यकाल स्वयं के लिये नहीं देश के लिये कुछ कर गुजरने के जज़्बे से ओतप्रोत है। मात्र ये दो कदम इतने परिणाममूलक सिद्ध होने की क्षमता रखते हैं कि लम्बे समय के बाद मिलने वाले परिणामों की प्रतीक्षा में पैदा होने वाली निराशा से बचना संभव है।

राष्ट्र निर्माण में सीएसआर की भूमिका पर संगोष्ठी

उदयपुर। एचसीएल फाउंडेशन के सीएसआर शाखा एवं जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विवि के संघटक उदयपुर स्कूल ऑफ सोशल वर्क के साझे में विद्यापीठ के प्रतापनगर स्थित कम्प्यूटर एण्ड आईटी विभाग में 'राष्ट्र निर्माण में सीएसआर की भूमिका' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

मुख्य अतिथि एचसीएल फाउंडेशन की निदेशक (सीएसआर) निधि पुंधीर ने कहा कि हमारा मकसद देश में समावेशी विकास के मॉडल को बढ़ावा देना है। हम सर्वहारा वर्ग के लिए कार्य कर सकें, इसके लिए एनजीओ को इस क्षेत्र की बेहतर समझ हासिल करने में मदद करते हैं। एचसीएल फाउण्डेशन देश भर में ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ एवं पर्यावरण के क्षत्र में कार्य करने वाली गैर सरकारी संस्थाओं को आर्थिक मदद एवं देश के सामने लाने का प्रयास करता है। एचसीएल पहली भारतीय कम्पनी है जिसने देश में कम्प्यूटर का निर्माण किया जो अपने लाभांश में से कुछ वंचित वर्गों के फण्ड तैयार करती है। कम्पनी की ओर से इस वर्ष 16.05 करोड़ रुपए गैर सरकारी क्षेत्रों में कार्य करने वाली संस्थाओं को देने का लक्ष्य रखा गया है। लक्ष्य यह है कि ग्रामीण क्षेत्रो में कार्य करने वाली संस्थाओं को आर्थिक मदद की जाए ताकि वे समाज के सबसे निचले तबके की मदद कर सके। संस्थाओं को इसके लिए ऑन लाइन रजिस्ट्रेशन कराना होगा जिसकी अंतिम तिथि 4 जून है। चार तकनीकी सत्रों में आवेदन की प्रक्रिया, पात्रता, सीएसआर से जुड़ी सामाजिक जिम्मेदारियां, विभिन्न तकनीकी पहलू आदि पर गहन मंथन किया गया।

कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने कहा कि राष्ट्र निर्माण में गैर सरकारी संस्थाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। कंपनियां सीएसआर के माध्यम से समाज से जुड़कर बड़े बदलाव ला सकती है। शिक्षा, पर्यावरण व स्वास्थ्य जैसे मसलों पर आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में अच्छे एनजीओ के माध्यम से पारदर्शी तरीकों से काम करने की खूब गुंजाइश है। एचसीएल जैसी संस्थाओं से जुड़कर एनजीओ को सबके विकास का सपना पूरा करना चाहिए।

इस अवसर पर विशिष्ठ अतिथि प्राचार्य प्रो. एस.के. मिश्रा, प्रो. पीसी जैन, डॉ. सुरेन्द्र कुमार आमेटा, निलिमा खेतान, अंशु जोशी, रोगिन थॉमस ने भी विचार व्यक्त किए। संगोष्ठी में सेवा मंदिर से महेंद्र चौहान, जतन संस्थान से ओमप्रकाश, फाउंडेशन फॉर आईकोलॉजी सिक्योरिटी के गिरधारीलाल वर्मा, प्रयास चित्तौड़गढ़ से रामेश्वर शर्मा, एसएसटी अलवर से रावतसिंह, सहेली संगठन दौसा से आशीष अग्रवाल, बागेरिया एजुकेशन ट्रस्ट जयपुर से विल्लास, उदयपुर स्कूल ऑफ सोशल वर्क्स के सुनील चौधरी, अल्फा एजुकेशन सोसायटी की आयशा वारया, एलआईबीआरए इंडिया जोधपुर से पंकज, अलर्ट संस्थान के अध्यक्ष जितेन्द्र मेहता, महान सेवा संस्थान के राजेन्द्र गामठ, पीडोमाड़ा डूंगरपुर के देवीलाल, एफईएस के गिरधारी वर्मा, उदयपुर स्कूल ऑफ सोशल वर्क और उदयपुर के साथ बीकानेर, नागौर, कोटा, अलवर, भरतपुर, जयपुर जिलों सहित 90 संस्थानों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

पोथीखाना

राजस्थान के थापे

पर्व-त्यौहार, राग-रंग, पूजा-पाठ, अनुष्ठान-संस्कार, उत्सव आदि हमारी अनेक कुंठाओं की अचूक दवा हैं। डॉ. महेन्द्र भानावत लिखित इस पुस्तक में मनोवैज्ञानिक पक्ष के अनेक संकेत हैं। हम शिक्षितजन दीवारों पर बने हुए इन टेढ़े-मेढ़े थापों को देखकर उन्हें बनाने वालों की जहालत पर कितनी बार हंसे होंगे। दशामाता की कहानियां कहने वाली एवं पीपल पूजा में दिनभर खपाने वाली स्त्रियों को हमने जाहिल और मूर्ख कहा होगा परन्तु हमने यह कभी नहीं सोचा कि ये पूजाएं, कहानियां, गीत एवं विविध प्रकार के अंकन हमारे अभावग्रस्त जीवन को मानसिक सम्पन्नता एवं तुष्टि प्रदान करने वाले हैं।

डॉ. भानावत ने यह मूल्यवान अध्ययन प्रस्तुत कर लोकवांग्मयवेत्ताओं के लिए एक ऐसे प्रासाद का दरवाजा खोल दिया है जिसमें अनेक ऐसे ही रत्नों की खोज की जा सकती है। -देवीलाल सामर, भूमिका से, पृ. 9, मूल्य 150 रूपये।

राजस्थान की संझ्या

मुझे यह ज्ञात नहीं था कि सांझी पक्ष के इतने गीत भी उपलब्ध हो सकते हैं जितने डॉ. महेन्द्र भानावत ने उपलब्ध किये हैं। उन्होंने सांझी सम्बन्धी कई कहानियों का उल्लेख भी किया है। हर व्रतोत्सव पर कहानियां कही जाने की परम्परा हमारे समाज में रही है। सांझी भी एक प्रकार से व्रतोत्सव ही है।

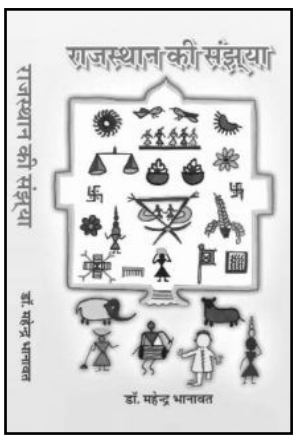

हमारे जीवन पक्ष की अनेक ऐसी परम्पराएं हैं जिन्हें हम छोड़ते चले जा रहे हैं। उन्हें छोड़ने से हमारी मांगलिक, कलात्मक एवं सकारात्मक प्रवृत्तियां खत्म होती हैं और जीवन शुष्क बन जाता है। इस दिशा में यह पुस्तक हमारे लिए आंख खोलने वाली है। - देवीलाल सामर, भूमिका से, पृ. 10, मूल्य 100 रूपये।

दोनों पुस्तकों का प्रथम संस्करण 1977 एवं परिवर्धित संस्करण 2018 है। प्रकाशक भारतीय लोककला मंडल, उदयपुर तथा वितरक राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर है।

साहित्य के राजकुमार का उल्लेखनीय रंजन

राजकुमार जैन 'राजन' ने साहित्य की सभी विधाओं में अपनी सार्थकता दिये समयबद्ध सुनाम किये हैं इसलिए मैं उन्हें साहित्य का राजकुमार कहने में

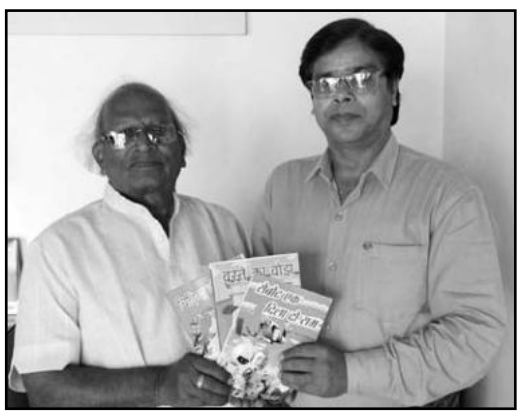

प्रफुल्लित होता हूं। उनकी अच्छाई यह है कि भारतीय जीवन बीमा निगम से सम्बद्ध होकर दूर-सुदूर तक इस क्षेत्र के सेवा-कल्पों के साथ-साथ वे साहित्य से जुड़े हर मसलों, सम्मेलन-संगोष्ठियों, पत्र-पत्रिका प्रकाशनों तथा अपने स्मरणीय पूज्यजनों की स्मृति में स्थापित पुरस्कार एवं सम्मान नवांकुरों को प्रोत्साहन देने हेतु प्रदान करने में शीलवान बने हुए हैं लेकिन मेरी दृष्टि में इससे भी एक और बड़ा और नेक कार्य वे बालसाहित्यपरक विविध विषयों की शिक्षाप्रद जीवन उज्वला पुस्तकें प्रकाशित कर उनका निशुल्क वितरण करने में अपने को प्रामाणिक बनाये हुए हैं।

जब उन्होंने मुझसे भेंट की तो एक पुस्तक 'गवरी' नाम से मेरी भी प्रकाशित की और दूसरी 'कठपुतली कला' पर मैं तैयार कर रहा हूं। उनका सर्वाधिक लेखन बालसाहित्यपरक कविता, कहानियों की पुस्तकें हैं जो कई जगह पुरस्कृत होकर गुजराती, मराठी, कन्नड़, पंजाबी, अंग्रेजी, राजस्थानी, तमिल, सिंधी एवं संस्कृत भाषाओं में अनुवादित हुई हैं। अन्य प्रान्तों की बात नहीं करें तो भी राजस्थान में तो उनके जैसा ऐसा कोई रचनाकार नहीं सुना गया जो अपने सृजन से विविधभाषी प्रान्तों में सर्वाधिक चर्चित हो।

हम सबके बीच वे अपवाद स्वरूप ही हैं कि उन पर लक्ष्मी और सरस्वती दोनों टूटमान हैं और वे उसी भाव से दोनों क्षेत्रों में अपनी सुगन्धी का लावा ले रहे हैं। दशामाता व्रतानुष्ठान की हर कहानी के अन्त में की गई कल्याण कामनाओं के अनुसार मैं भी यही कहना चाहूंगा कि जैसी देवी लक्ष्मी और सरस्वती राजन पर टूटमान हुई वैसी सब पर टूटमान हो।

चौमासा का चौंकाने वाला विशेषांक

मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् भोपाल की आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी पिछले 33 वर्षों से 'चौमासा' नामक चार माही पत्रिका का उल्लेखनीय प्रकाशन कर रही है। कई विशेषांक भी चौमासा के बड़े मूल्यवान धरोहर बने हुए हैं। उसी क्रम में 104वां विशेषांक अशोक मिश्र के पांडित्यपूर्ण सम्पादन में राजा विक्रमादित्य पर केन्द्रित है। मिश्रजी ने इसके प्रारम्भ में लिखा है- 'जननायक महाराजा विक्रमादित्य एक शासक के साथ ही अत्यन्त उदार चरित्र के धनी थे जिसके कारण लोक में उनका बहुत समादर रहा है। उनके व्यक्तित्व और गुणों को मिथकीय रूप प्रदान करने का काम सदियों से लोकजनों ने किया है। एक शासक की दृष्टि की समग्रता का अनुभव उनके साथ सम्बद्ध कथाओं, मिथकों और घटनाओं-कल्पनाओं से सहज किया जा सकता है।'

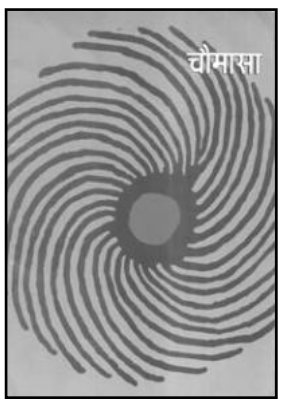

कुल 138 पृष्ठ के इस विशेषांक में विविध अंचलों के मान्य लेखकों के विक्रमादित्य से सम्बद्ध तेरह लेख हैं। इनमें विक्रमादित्य से जुड़े कई नये तथ्य, स्थापनाएं और शोधात्मक तथ्य सर्वथा चौंकाने वाली नई जानकारी लिये हैं। शिवप्रसाद 'कमल' ने लिखा- 'भारत में इतिहास लेखन की अधिकारिक, तथ्यपूर्ण, तिथि, वर्ष आदि की सही-सही कमी सदा दिखलाई देती है। ईस्वी सन् से बारहवीं शती का इतिहास अंधकारमय ही है। प्राय: अन्य व्यक्तियों, विशेषकर राजकुलों के इतिहास के लिए हमें विदेशी इतिहासकारों के कथन पर विश्वास करना पड़ता है। अनेक महापुरुषों और सम्राटों के सम्बन्ध में मात्र अनुमान का सहारा लेना पड़ता है। यही हाल उज्जैन नरेश विक्रमादित्य का है। वास्तव में विक्रमादित्य कोई नाम नहीं, वीरता के लिए दी जाने वाली उपाधि है। इनके बड़े भाई भर्तृहरि को जब शासन और सत्ता से वैराग्य हुआ तो सारा राजकार्य विक्रमादित्य के हाथों में आया।' (पृ. 120)

डॉ. महेन्द्र भानावत ने लिखा- 'राजा विक्रमादित्य के समय कठपुतलियों के खेल ने एक नया मोड़ लिया। विक्रमादित्य जिस सिंहासन पर बैठकर न्याय करता था वह बत्तीस पुतलियों से सुशोभित था। पुतलियां राजा को सत-असत का पता लगा कर पूरी जानकारी देती और उसके अनुसार राजा न्याय करता। ऐसा न्यायप्रिय राजा दूसरा नहीं हुआ।' (पृ. 53)

यही नहीं डॉ. भानावत ने मांडू में सिंहासन बत्तीसी की खोज की और बताया कि लाल बंगले की तरफ की लांबा तालाब नामक बस्ती के पास चार दरवाजे वाले खंडहर बने कक्ष में यह सिंहासन प्रकट होता था। इसे बत्तीस पुतलियां लाती थीं इसीलिए इसका नाम सिंहासन बत्तीसी पड़ा। (पृ. 57)

विजय वर्मा केन्द्रित अक्सर का 'कला का कल्पवृक्ष' विशेषांक

हेतु भारद्वाज के निष्ठावान सम्पादन में प्रकाशित 'अक्सर' का जनवरी-जून 2018 का अंक विजय वर्मा केन्द्रित है जिसका नाम 'कला का कल्पवृक्ष' दिया है। इसमें सम्मिलित प्रत्येक लेख विजय वर्मा के व्यक्तित्व, व्यवहार तथा उनकी सदाबहार जीवनशैली को कई रूपों, कई रंगों तथा कई तरानों में बड़ी विलक्षणता के साथ उद्घाटित करता है।

उनके सम्बन्ध में सम्पादक हेतु भारद्वाज का यह कथन- 'मैं समुद्र के किनारे खड़ा न तो उसकी थाह ले पा रहा हूं और न उसमें छिपे रत्नों को पहचान पा रहा हूं।' साधारण सहज और सामान्य मानव के असाधारण तथा वैशिष्ट्य को उत्कर्ष के सर्वोच्च शिखर पर यशमंडित करने में सक्षम है। सरकार में उच्च पदों पर आसीन व्यक्तियों में वर्माजी जैसा व्यक्तित्व जिन खोजा तिन पाइया बमुश्किल ही मिलेगा।

अपने पद की गरिमा रखते हुए वे सदैव धारा के विरूद्ध दिखाई देने का जोखिम उठाते रहे। उन्होंने कभी किसी कीमत पर सत्ता का दुरुपयोग नहीं किया। स्वयं ने भी कोई नाजायज काम नहीं किया और किसी से बेगार में कभी कोई काम नहीं करवाया। उनके साहसी शौर्य के आगे बड़े नेता और मन्त्री तक उनका कुछ नहीं बिगाड़ सके।

उनकी ऐसी खूबियों को उकेरते आर.एस. अरविंद लिखते हैं- 'वर्माजी के तर्क बहुत कुशलता से भरे होते थे। भय और लालच को उन्होंने जीत लिया था।' जयपुर के नाहरगढ़ के ऊपर कुछ बहुत प्रभावशाली लोग एक फाइव स्टार होटल बनाना चाहते थे। ऐसे ही कई मंत्रियों ने विवेकाधीन कोटे के तहत अविवेकी काम करते हुए हाउसिंग बोर्ड के मकानों की काफी बंदरबांट की। एक बहुत प्रभाव वाले मंत्री ने उन पर भारी दबाव बनाया। उनकी दृढ़ता ने उदयपुर की पीछोला झील के किनारे होटल नहीं बनने दिया लेकिन उनका अंगद का पैर कोई नहीं हिला सका। (पृ. 30)

श्री वर्माजी के जीवन का हर पक्ष पारदर्शी रहा। ऐसे लोग बहुत मिलेंगे जो हर समय आइना साफ करते हैं मगर अपने चेहरे की धूल साफ नहीं करते। ऐसे में विजय वर्मा हमारे सम्मुख उदाहरण हैं कि उन्होंने सरकार में रहते मूंफली का एक दाना तो दूर, उसका छिलका तक नहीं छुआ। ऐसे पग-पग पर अनेक प्रसंग हैं जो उनके मानव मन की आर्ट एवं अनोखी मिसाल बनते हैं।

साहित्य, संस्कृति, कला और लोककला के प्रति वर्माजी की अपनी निजी दृष्टि रही है। इस क्षेत्र में काम कर रहे व्यक्तियों के सम्बन्ध में भी उनका अपना पैठदार सोच रहा है। इस विषयक नंद भारद्वाज की उनसे हुई बातचीत कई बिन्दुओं का खुलासा करती है। विशेषांक के अन्त में वर्माजी के लेखन की बानगी स्वरूप निबन्ध, कहानी, संस्मरण, यात्रा विवरण, कविता, व्यंग्य, संगीतरूपक का जायजा लेते पाठक उनके कृतित्व को कोरावट से सृजन का सिंहावलोकन कर सकता है। अक्सर का प्रकाशन 101/47 मीरांमार्ग, मानसरोवर, जयपुर-20 से है।

जैन विद्या के इन्द्रधनुष

डॉ. दिलीप धींग जैन विद्या के गहन अध्येता हैं। उन्हीं के शब्दों में कहें तो जैन विद्या के अन्तर्गत जैनधर्म व संस्कृति को जाना-समझा जाता है लेकिन इसके अन्तर्गत केवल पारम्परिक तरीके से जैनधर्म को जानने-देखने की बजाय उसे अनेक आगमों में जाना, देखा, समझा व समझाया जाता है। जैन दर्शन की ही भाषा में कहें तो अनेकान्त दृष्टि से जैनधर्म और संस्कृति को समझना जैन विद्या है। जैन विद्या हो या ज्ञान की कोई अन्य धारा ; जैन दर्शन का अनेकान्त सिद्धान्त ज्ञान-विज्ञान के अगणित अनजाने क्षितिज उद्घाटित कर सकता है तथा संसार में नव आलोक फैला सकता है।

(सम्पादकीय, पृ. 6)

इसीलिए इस ग्रन्थ के प्रकाशन संस्थान रिसर्च फाउण्डेशन फॉर जैनोलोजी के संस्थापक महासचिव डॉ. एस. कृष्णचन्द चोरड़िया का यह कथन समीचीन लगता है जो ग्रन्थ की सार्थकता भी सिद्ध करता है- 'इन्द्रधनुष में सात रंग होते हैं। जैन दर्शन के अनेकान्तवाद में सात नय होते हैं। अनेकान्त की कथन शैली स्याद्वाद है जिसमें सात भंग होते हैं। सात नय और सप्त भंगी से सत्य को विभिन्न आयामों से जाना और समझा जाता है। इस पुस्तक का हर निबन्ध इन्द्रधनुषी छटा लिये है।

(प्रकाशकीय, पृ. 5)

कुल 434 पृष्ठीय इस ग्रन्थ में 35 निबन्ध हैं जो जैनधर्म तथा दर्शन के तलस्पर्शीय स्वरूप से लेकर आधुनिक सन्दर्भ में जैन विद्या की आवश्यकता एवं उपयोगिता को रेखांकित करते हैं। इनका लेखन विगत दो दशकों में हुआ है। लेखक के चयनित शोध निबन्ध विविध पत्र-पत्रिकाओं तथा विशिष्ट ग्रन्थों एवं पुस्तकों में प्रकाशित किये हुए हैं। मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा में इन निबन्धों का योग निर्विवाद है।

नारायण सेवा जुड़ा श्रेया घोषाल के कॅन्सर्ट के साथ

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान की सहायक संस्था नारायण सेवा संस्थान यूके ने युनाइटेड किंगडम में श्रेया घोषाल के संगीत कार्यक्रम के लिए चैरिटी पार्टनर के रूप में सहयोग किया है। कॅन्सर्ट का आयोजन बर्मिंघम, लंदन और ब्रिटेन में लीसेस्टर में किया गया। इस पहल के साथ नारायण सेवा संस्थान ने भारत में दिव्यांग लोगों और वंचित व्यक्तियों के लिए की जा रही पहल के बारे में ब्रिटेन में एनआरआई समुदाय के बीच जागरूकता पैदा की और उन्हें इस कार्य में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।

संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि नारायण सेवा संस्थान ने पिछले 30 सालों में 3.5 लाख से अधिक रोगियों का ऑपरेशन किया है। उन्हें चिकित्सकीय सेवाओं के साथ दवाइयां और प्रौद्योगिकी का निशुल्क लाभ देकर पूर्ण सामाजिक-आर्थिक सहायता प्रदान की है। इस तरह का नेक काम दानदाताओं की उदारता के कारण ही संभव हो पाया है।

श्री अग्रवाल ने यूके में पूरे एनआरआई समुदाय को आगे आने और अपनी क्षमता के अनुसार इस नेक काम में शामिल होने का आह्वान किया। इस दौरान नारायण सेवा संस्थान के परोपकार से जुड़े कार्यों की जानकारी देने के लिहाज से पांच मिनट की एक डॉक्यूमेंट्री का प्रदर्शन भी किया गया। इसके साथ ही कॉन्सर्ट स्थल पर लगाई गई मीडिया स्टॉल पर संस्थान के कामकाज की जानकारी वाले साहित्य का वितरण किया गया। करीब 16,000 लोगों की मौजूदगी में आयोजित यह कॅन्सर्ट बहुत कामयाब रहा।

एमपी बिड़ला का नया टीवी कमर्शियल 'पापा बेटे की कहानी'

उदयपुर। एमपी बिड़ला सीमेंट ने हाल ही में एक नया टीवी कमर्शियल 'पापा बेटे की कहानी' के साथ अपना

नया 'सुपर प्रीमियम' उत्पाद, परफैक्ट प्लस लॉन्च किया है। एमपी बिड़ला सीमेंट के एग्जीक्यूटिव प्रेसिडेंट संदीप रंजन घोष ने कहा कि ब्रांड की सोच 'सीमेंट से घर तक' को ध्यान में रखते हुए, एमपी बिड़ला सीमेंट बस सिर्फ सीमेंट बनाते और बेचते ही नहीं है बल्कि हम इसका उपयोग करने वाले ग्राहकों को भी अच्छी तरह से समझते हैं। यह नया टीवी कमर्शियाल सीधे अपना घर बनाने वाले निर्माता से सीधा संवाद करता है। एमपी बिड़ला परफैक्ट प्लस के लिए नया टीवी कमर्शियल कोलकाता के ओगिल्वी द्वारा निर्मित है, जिसमें एक पिता और बेटे की दुनिया को दिखाया गया है और वे अपना एक घर बनाने का एक सांझा सपना देखते हैं। राजेंद्र गुप्ता और अमित सियाल अभिनीत, यह फिल्म एक निर्माण स्थल में शुरू होती है, जहां दोनों अपने घर के लिए सही तरह के सीमेंट पर बातचीत कर रहे हैं।

यूटीआई इक्विटी फंड -संपत्ति निर्माण के 25 वर्ष

उदयपुर। यूटीआई इक्विटी फंड को मई 1992 में लॉन्च किया गया था और यह पिछले 25 वर्षों से अधिक समय से संपत्ति निर्माण का कार्य कर रही है। इस योजना ने उदारीकरण से लेकर डिजिटलीकरण तक भारतीय अर्थव्यवस्था के बदलते स्वरूप के अनुरूप स्वयं को बनाये रखा है।

यूटीआई इक्विटी फंड के कार्यकारी वाइस प्रेसिडेंड और फंड मैनेजर अजय त्यागी ने कहा कि यूटीआई इक्विटी फंड एक ओपन एंड इक्विटी स्कीम है, जिसमें 4,905 करोड़ रु. की राशि लगी है और 31 मार्च 2018 तक इसके 7.42 लाख निवेशक खाते हैं। इस स्कीम का प्राथमिक उद्देश्य अच्छी वृद्धि की संभावना वाली कंपनियों के इक्विटी शेयर्स और कन्वर्टिबल एवं नॉन-कन्वर्टिबल बॉन्ड्स/डिबेंचर्स व मुद्रा बाजार उपकरणों में स्कीम के फंड्स का निवेश कर इकाईधारकों की पूंजी में वृद्धि करना है। योजनाओं के वर्गीकरण एवं परिमेयीकरण के परिणामस्वरूप, यूटीआई इक्विटी फंड को मल्टी कैप फंड के रूप में पहचाना गया है, जो बाजार पूंजीकरण स्पेक्ट्रम में निवेश करता है, जबकि इसके पहले वाले अवतार में, प्रमुख रूप से बड़ी पूंजी वाले स्टॉक में निवेश किया जाता था। हालांकि, यह फंड उच्च परिचालन नकद प्रवाह, आरओसीई आदि वाले स्टॉक्स में निवेश करने की अपनी निवेश रणनीति को जारी रखेगा। 31 मार्च, 2018 के आंकड़ों के अनुसार, इस फंड का 66 प्रतिशत हिस्सा बड़े पूंजीकरणों में और बाकी हिस्सा मझोले एवं छोटे पूंजीकरणों में है।

स्कीम की शीर्ष धारक कंपनियों में जानी-मानी और अच्छी तरह से शोध की गयी कंपनियां शामिल हैं, जैसे- बजाज फाइनेंस, इंडसइंड बैंक, एचडीएफसी बैंक, येस बैंक, इंफोसिस, कोटक महिंद्रा बैंक, एचडीएफसी लि., टीसीएस, मारूति सुजुकि इंडिया लि. और माइंडट्री लि., जिनमें पोर्टफोलियो का लगभग 41 प्रतिशत निवेश है। इस स्कीम का 25 वर्षों का प्रामाणिक ट्रैक रिकॉर्ड है और इसने आरंभ के बाद से (31 मार्च, 2018 को) 10.74 प्रतिशत के बेंचमार्क रिटर्न के मुकाबले 12.18 प्रतिशत का रिटर्न (सीएजीआर) दिया है। आरंभ के समय निवेश की गयी 10,000 रु. की राशि मार्च, 2018 के अंत तक 1,95,910 रु. हो जाती, जबकि एसऐंडपी बीएसई 100 टीआरआई का बेंचमार्क 1,40,2233 रु. होता।

विजेताओं को मिले आईफोन

उदयपुर। वोडाफोन इण्डिया ने अपनी तीस दिवसीय प्रतियोगिता 'पग-ए-थोन' के लिए राजस्थान से दो भाग्यशाली विजेताओं का ऐलान किया। जयपुर से गौरव शर्मा ने आईफोन 8 तथा नागौर से योगेश कुमार ने आईफोन 7 जीता। वोडाफोन इंडिया राजस्थान के बिजनेस हैड अमित बेदी ने कहा कि 'पग-ए-थोन' राष्ट्रीय गेमिंग प्रतियोगिता थी जिसमें वोडाफोन के प्रीपेड एवं पोस्टपेड उपभोक्ताओं ने माय वोडाफोन ऐप के माध्यम से हिस्सा लिया। उपभोक्ताओं को ऐप के सहज एवं अनुकूलित इंटरफेस के माध्यम से सर्फिंग कर विभिन्न लोकेशनों में छुपे वोडाफोन पग्स ढूंढने थे। हर दिन एक भाग्यशाली विजेता को एक आईफोन 8 जीतने का अवसर मिला। श्री बेदी ने कहा कि उपभोक्ताओं की जीत में ही हमारी जीत है। उपभोक्ताओं की लिए हमारी प्रतिबद्धता हमें सर्वश्रेश्ठ प्रोडक्ट लॉन्च करने तथा उत्कृष्ट सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रेरित करती है।

टू ब्लू के तीन नए कलेक्शन लॉन्च

उदयपुर। वैश्विक भारतीयता की भावना समेटे हुए टू ब्लू ने अपने तीन नए कलेक्शस के साथ स्प्रिंग समर 2018 लाइन लॉन्च की है। अरविंद लाइफस्टाइल ब्रांड्स के सीईओ आलोक दुबे ने कहा कि टू ब्लू में इस सीजन के दौरान तीन अलग-अलग कलेक्शन की पेशकश की है। द काशी कलेक्शन, सिग्नेचर कलेक्शन और लंदन में रहने वाले भारतीय डिजाइनर पॉल झीटा द्वारा एक्सक्लूसिव सैविल रो कलेक्शन है जो दिग्गज क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर से प्रेरित हैं।

इस ब्रांड के साथ करीबी से जुड़े क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर ने कहा कि यह इकाई हाउस ऑफ अरविंद के साथ मेरे जुड़ाव के बाद सामने आया है जो फैशन दुनिया में एक जाना-माना नाम है। ब्रांड और प्रत्येक कलेक्शन को तैयार करने में काफी प्रयास और विचार किया गया है। इस वर्ष की पेशकश में सैविल रो से ख्याति बटोर चुके पॉल झीटा की ओर से तैयार किया गया एक विशेष कलेक्शन है और मुझे पूरा भरोसा है कि दिल से सही मायने में हर हिंदुस्तानी को यह एप्रैल कलेक्शन पसंद आएगा। श्री झीटा को मुख्य रूप से पुरुषों के पारंपरिक परिधानों के लिहाज से जाना जाता है जिनके पास अमिताभ बच्चन, बैरी गिब, मॉन्टी पनेसर, अभिषेक बच्चन, डिनो मोरिया, अतुल कसबेर जैसे जाने-माने भारतीय ग्राहक हैं।

कॅरियर मार्गदर्शन से मिली जीवन को नई दिशा

उदयपुर। होनहार विद्यार्थियों के मार्गदर्शन के लिए चित्तौड़ा जैन विकास संस्थान की ओर से टाउन हॉल स्थित सुखाड़िया रंगमंच पर कॅरियर मार्गदर्शन मोटिवेशनल सेमिनार आयोजित किया गया।

प्रारम्भ में प्रो. एस. एल. जैन एवं प्रदीप सेलावत ने स्वागत उद्बोधन देते हुए सेमीनार के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज की आधुनिक जीवन शैली के साथ ही बच्चों को आधुनिक शिक्षा पद्धति की भी जानकारी होना जरूरी है। अगर इसकी जानकारी बच्चों में होगी तो ही इनका सर्वांगीण विकास हो सकेगा। डायरेक्टर टीएडी कमिश्नर ऑफिस सुधीर दवे ने राज्य सरकार द्वारा अल्पसंख्यकों के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की जानकारी देते हुए कहा कि आम लोगों में इनकी जानकारी नहीं होने से वह इनका लाभ नहीं उठा पाते हैं और प्रतिभा होने के बावजूद आर्थिक परेशानियों के चलते बच्चे पिछड़ जाते हैं जिससे उनका कैरियर बर्बाद हो जाता है।

प्रो. दीपक शर्मा ने कहा कि विद्यार्थियों में मुख्यत: तीन गुण होना चाहिये पहला लक्ष्य, दूसरा रूचि और तीसरा स्कील यानि कौशल विकास। अगर ये तीनों गुण हैं तो परिस्थितियों के अनुसार बच्चों का कैरियर अपनेआप बन जाता है। एसेंट क्लासेज के डायरेक्टर मनोज बिसारती ने कहा कि विद्यार्थियों को हमेशा अपने अन्दर एक जुनून कायम रखना चाहिये। 10वीं के बाद हमें कौनसा सब्जेक्ट लेना है, इसकी पढ़ाई कितनी कठिन है, इतनी मेहनत मैं कर पाऊंगा या नहीं यह सब नहीं सोच के सिर्फ एक जुनून रखना चाहिये कि मेरे लिए कोई भी पढ़ाई और कोई भी काम मुश्किल नहीं है।

एमडीएस ग्रुप ऑफ स्कूल्स के डायरेक्टर डॉ. शैलेन्द्र सोमानी ने अभिभावक और बच्चों में कैसे सामंजस्य हो ताकि एक दूसरे की भावनाओं को समझ सके विषय पर विस्तार से चर्चा की। जिला कलक्टर विष्णुचरण मलिक ने कहा कि बच्चों के मूल गुरू माता-पिता होते हैं। मां-बाप ही उन्हें अच्छे से जानते हैं और उनकी अच्छी मदद कर

सकते हैं लेकिन मां-बाप को भी बच्चों के गलत निर्णय पर कभी भी अपनी सहमति नहीं देनी चाहिये और न कभी बच्चों के अच्छे निर्णय पर स्वयं की इच्छाएं थोपना चाहिये।

जिला पुलिस अधीक्षक राजेन्द्र प्रसाद गोयल ने जीवन के कुछ व्यावाहारिक पक्षों पर बात करते हुए कहा कि 10वीं के बाद बच्चों को अति महत्वाकांक्षी नहीं बनना चाहिये। कॅरियर को लेकर कभी अपने दीमाग पर ज्यादा जोर नहीं देना चाहिये। हमेशा यह सोचना चाहिये कि आप जो कर रहे हैं वह सही है लेकिन इतनी समझ जरूर होनी चाहिये कि आपका निर्णय सही है।

समारोह को सारथी क्लासेज के डायरेक्टर एम एस भाटी, अरावली हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. आनंद गुप्ता जायडस अस्पताल अहमदाबाद के न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. अरविंद शर्मा, प्रो. टेलेंट के डायरेक्टर विनीत बया, एक्मे ग्रुप के डायरेक्टर अमित जैन ने भी संबोधित किया। आभार नाथुलाल विदाला ने जबकि संचालन आशा जैन ने किया।

गीतांजली पहला एनएबीएच एक्रेडिटेड मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल बना

उदयपुर। उदयपुर का गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल, एनएबीएच से मान्यता के साथ ही सम्पूर्ण राजस्थान का पहला मेडिकल कॉलेज एवं मल्टी सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल बन गया है जिसके तहत एनएबीएच ट्रायम्फ अटेनमेंट

सेरेमनी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि डायरेक्टर जनरल एसोसिएशन ऑफ हेल्थकेयर प्रोवाइडर ऑफ इंडिया डॉ गिरधर ग्यानी, विशिष्ठ अतिथि गीतांजली ग्रुप के चेयरमेन जेपी अग्रवाल, वाईस चेयरमेन कपिल अग्रवाल, कार्यकारी निदेशक अंकित अग्रवाल, वाईस चांसलर गीतांजली यूनिवर्सिटी डॉ आरके नाहर, डीन गीतांजली मेडिकल कॉलेज डॉ. एफएस मेहता एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल डॉ. किशोर पुजारी थे। वरिष्ठ महाप्रबंधक क्वालिटी कंट्रोल सुकांता दास ने बताया कि गीतांजली राजस्थान का पहला मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल है जिसको मात्र 10 महीने 6 दिन के रिकॉर्ड समय में एनएबीएच एक्रेडिटेशन प्राप्त हुआ है। इस एक्रेडिटेशन को प्राप्त करने के लिए आमतौर पर तीन साल लगते हैं परंतु गीतांजली की पूरी टीम के अथक प्रयास एवं कड़ी मेहनत ने इतने कम समय में इसे प्राप्त कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। इस अवसर पर डॉ. ग्यानी ने जेपी अग्रवाल, कपिल अग्रवाल, अंकित अग्रवाल, डॉ आरके नाहर, डॉ एफएस मेहता, डॉ किशोर पुजारी, सुकांता दास को एनएबीएच प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

जिंक को 'बेस्ट सीएसआर कलेक्टिव एक्शन लीडरशिप' अवार्ड

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक को सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए सीएमआरयू-इण्डिया सीएसआर अवार्ड ने 'बेस्ट सीएसआर कलेक्टिव एक्शन लीडरशिप' अवार्ड से सम्मानित किया है। जिंक की ओर से यह सम्मान हिन्दुस्तान जिंक के हेड-कार्पोरेट कम्यनिकेशन पवन कौशिक ने नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में ग्रहण किया। श्री कौशिक ने बताया कि कंपनी सामाजिक कल्याण, ग्रामीण विकास तथा महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण के लिए सदैव कटिबद्ध है। जिंक ने सामाजिक कार्यों में महिला एवं बाल विकास, कुपोषण, महिला सशक्तिकरण, बालिका शिक्षा, नंदघर, माईनिंग एकेडमी, फुटबाल एकेडमी, शिक्षा सम्बल, सेनीटेशन तथा आर्थिक दृष्टि से गांवों में आधारभूत सुविधाएं तथा ग्रामीण युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षण उपलब्ध कराने जैसे कार्य सम्पादित किये हैं।

बावजी चतुरसिंहजी.....

(पृष्ठ दो का शेष)

उदाबा ने बताया कि वे सुखेर की हवामगरी पर भी बावजी के साथ रहे। वहां गंदोली का कन्ना डांगी भी हमारे साथ रहा। बावजी ने एक दोहा ऐसा लिखा जिसमें हम तीनों ही अपने-अपने हाल में मगन हैं-

कन्नो काटे काकड़ी, उदो होजे दाल।
चतरसिंघ पोथ्यां भणै, ई हवामगरी रा हाल।।

अर्थात् - हवा मगरी पर कन्ना ककड़ी काट रहा है। मैं दांत साफ कर रहा हूं और बावजी किताबें बांच रहे हैं।

लोकसंगीतज्ञ चन्द्र गंधर्व मुझे एक दिन सुखेर की हवामगरी ले गये। वहां बावजी के रहने, लिखने, पढ़ने का स्थान बताया और कहा भी कि इस पूरी मगरी पर लोगों ने कब्जा कर रखा है। इसे बावजी की यादगार का नामी स्मारक बनाना चाहिये। उदाबा संवत् 1972 से लेकर 1986 तक बावजी के साथ रहे। बावजी नियमित रूप से कुछ न कुछ लिखते रहते थे। लिखकर वे उदाबा को सुनाते। उनको कबीरदासजी के भजन अच्छे लगते। वे अपने पास पिस्तोल रखते थे।

एक रात कन्ना की आंखें दुखने के कारण बावजी व उदाजी उसके खेत पर सोने गये। रात को सुअर आये। वे मक्की की खड़ी फसल को नुकसान देने वाले थे। यह देख बावजी ने पिस्तोल निकाल भड़ीका किया तो सारे सुअर भागते बने। यों बावजी कभी किसी जीव-जंतु को नुकसान नहीं पहुंचाते। कोई खरगोश भी मार देता तो उसे एक रूपया देकर छुड़वा लेते और आगे से किसी का शिकार नहीं करने की समझाइश देते। बावजी ने कीका के घर रामजी का साक्षात्कार किया तब लिखा- 'कीका थारे आंगणे म्हैं रमता देख्या राम।'

उदाजी ने बताया कि संवत् 1998 की पौष सुदी तीज को आधी रात दो बजकर चालीस मिनिट पर बावजी को साक्षात्कार हुआ। उस दिन बावजी ने उदाजी को कह दिया कि रात को नींद मत निकालना पर उदाजी सो गये लेकिन बिना किरण वाला सूरज अवश्य उदित हुआ और बावजी ने अलख पचीसी लिखना शुरू किया। यदि उदाजी उस समय जगे होते तो उनका भी कल्याण हो जाता।

यह किस्सा सुनाते समय उदाबा के पास उनका भतीजा भैरू था। उसने बताया कि काकाजी (उदाबा) ने अभी इतना जो कुछ बताया, उसने भी पहली बार ही सुना है। ये किसी को कुछ भी बताते नहीं हैं। इन्हें भी साक्षात्कार हुआ है। ये भी रात को जगकर कुछ न कुछ करते रहते हैं। उदाबा चुपचाप सुनते रहे। अंत में हमारे आग्रह पर अलख पचीसी के दो दोहे सुनाये-

बकरी चरगी नार ने, पालो पाती जांण।
वी बकरी रो ग्वाल है, उदिया अलख पिछांण।।
कागद कीड़ी रे जस्यो, जी में वेद पुराण।
वी में आखर एक नीं, उदिया अलख पिछांण।।

इसी तर्ज पर एक दोहा हमने भी सुनाया और उनसे विदा ली-

देख-देख ने चालणो, हग्गो करणो जांण।
अण छाण्यो पीणो नहीं, उदिया अलख पिछांण।।

नाथद्वारा की भक्तिमूर्ति भूरीबाई बावजी से अधिक प्रभावित थीं। वे तो अपने को अलख ही कहतीं। डॉ. हरिसिंह चूण्डावत भूरीबाई से अत्यन्त प्रभावित थे। उन्होंने तो भूरीबाई की स्मृति में अलख नयन नाम से उदयपुर में आंखों का हॉस्पिटल ही प्रारम्भ कर दिया। चूण्डावतजी ने मुझे बताया कि बावजी के प्रमुखों में शोभालाल शास्त्री, कपूरचंद अग्रवाल, जेठालाल दशोरा, रतनलाल आमेटा, उमाशंकर द्विवेदी, चांदणमल भाणावत, बसंतीलाल महात्मा आदि थे। गोपाल गंधर्व उनकी रचनाओं के मुख्य गायक थे। गोपालजी के बाद उनके लड़के चन्द्र गंधर्व ने राजस्थान के बाहर भी बावजी की रचनाओं को सशक्त स्वर दिये।

1 जुलाई 1929 को बावजी का शरीरान्त हुआ। उनकी मृत्यु से पूर्व उन्होंने 'जगदीशर जीवाय दियो, थें ही थारो काम कियो' पद लिखा। मेवाड़ में संत, योगी और कवि के रूप में जितनी प्रसिद्धि बावजी चतुरसिंहजी को मिली, अन्य और किसी ने प्राप्त नहीं की।

संक्रमित हुई आँख का सफल ऑपरेशन

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेस (पीआईएमएस) हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने चोट से संक्रमित हुई आंख का सफल ऑपरेशन किया है।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि सराड़ा निवासी मावाजी डांगी (60) की आँख में चोट के कारण संक्रमण फैल गया था। वे कई जगह इलाज के लिए गए लेकिन उनकी समस्या का समाधान नहीं हुआ। गत दिनों परिजन मावाजी को पीआईएमएस हॉस्पिटल लेकर आए। यहां सभी जांचों के पश्चात नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. रिषेन्द्र सिंह एवं टीम द्वारा मरीज का कार्निया ट्रांसप्लांट किया गया। ऑपरेशन के बाद मरीज की आँख की रोशनी 6/36 तक आ गई है जबकि ऑपरेशन के पूर्व सिर्फ हैण्ड मूवमेंट के बराबर रोशनी थी।

मदर्स-डे पर सूक्ष्म पुस्तिका

सूक्ष्म पुस्तिका के चितेरे चंद्रप्रकाश चितौड़ा ने मदर्स-डे पर अपनी स्मृतिशेष मां रोशनबाई के जीवन को विविध यादों में अंकित किया। इसमें चित्तौड़ा ने 201 अक्षतों पर 51 बार माँ लिखा है और 251 मोतियों की माला बनाकर माँ की ममता को दर्शाया है।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

एपिरोक के नये क्षेत्रीय कार्यालय का शुभारंभ

उदयपुर। खनन, बुनियादी ढांचे और प्राकृतिक संसाधन उद्योगों के लिए उपकरण बनाने वाली स्वीडिश कंपनी

एपिरोक ने उदयपुर, में अपना नया कार्यालय खोला है। फतहपुरा स्थित नए कार्यालय का उद्घाटन हिंदुस्तान जिंक लि. के सीईओ सुनील दुग्गल ने किया था। इस अवसर पर एपिरोक माइनिंग इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर जैरी एंडरसन और एपिरोक और हिंदुस्तान जिंक के गणमान्य लोग उपस्थित थे।

जैरी एंडरसन ने कहा इस कार्यालय सहित देशभर में कंपनी के क्षेत्रीय कार्यालयों की संख्या आठ हो गई है। एक ग्राहक केंद्रित कंपनी होने के नाते एपिरोक संचालन और सेवा पर बढ़े हुए फोकस के साथ ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करेगा। उन्होंने कहा नए कार्यालय के माध्यम से उच्च उत्पादकता, ऊर्जा दक्षता और सुरक्षा मानकों के साथ एडवांस्ड, विविध और एर्गोनॉमिक उत्पाद उपलब्ध कराए जाएंगे। यह रोजगार और निर्माण उपकरणों की विस्तृत श्रृंखला के प्रबंधन और संचालन में लोगों को रोजगार भी प्रदान करेगा। एपिरोक के विस्तार में प्रदर्शन को उत्कृष्ट बनाने के लिए गोदामों, प्रशिक्षण और नवीनीकरण केंद्रों का एकीकरण भी शामिल किया जाएगा। एपिरोक माइनिंग इंडिया लि. ने नासिक और हैदराबाद में अत्याधुनिक विनिर्माण इकाइयां खोली हैं, बैंगलुरू में इसका विश्व स्तरीय इंजीनियरिंग सेंटर है और भारतभर में इसके बिक्री और क्षेत्रीय कार्यालय संचालित हैं। कंपनी के चैनल पार्टनर नेटवर्क को बेहद प्रतिबद्ध और उत्साही टीम द्वारा समर्थन दिया जाता है।

देश की एकता अखण्डता के लिए हल्दीघाटी युद्ध से प्रेरणा लें : प्रो. सारंगदेवोत

उदयपुर। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय की ओर से प्रात:स्मरणीय वीर शिरोमणी महाराणा प्रताप की 478वीं जयंती के अवसर पर आयोजित व्याख्यानमाला में मुख्य अतिथि के रूप में कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने कहा कि प्रताप साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रतीक थे। उनकी टीम में हर जाति वर्ग के लोग थे। मानवीय मूल्यों का जब कभी मूल्यांकन होगा तब प्रताप का स्थान कोई नहीं ले पायेगा। हल्दीघाटी के स्वाभिमान के लिए लड़े गए युद्ध से प्रेरणा लें। उन्होंने देश के गौरव के लिए आव्हान किया कि हमारे देश की एकता ऐसी हो कि उसकी तरफ कोई आंख उठा कर न देख सके। विशिष्ठ अतिथि डॉ. हेमशंकर दाधीच ने कहा कि प्रताप का पूरा जीवन कठिनाइयों भरा रहा। देश के चहुंमुखी विकास के लिए हम सबको संगठित होकर देश प्रेम की भावना जगानी होगी। प्रताप के समर्पण, त्याग एवं मानवीय मूल्यों का युवाओं को अनुसरण करना चाहिए।

दुबई निवेश के लिए सबसे सुरक्षित बाजार

उदयपुर। विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, संयुक्त अरब अमीरात दुनिया का दूसरा सबसे सुरक्षित देश है। यहाँ व्यापार, परिवहन और संस्कृति के लिए एक वैश्विक केंद्र है। यहाँ गगनचुंबी इमारतों, चमकीले आवासीय भवनों और पांच सितारा होटलों को लोकप्रिय करके ताज पहने हुए मार्गों के साथ घूमने वाले महानगर के रूप में सुरक्षित, विविध और विकसित है। दुबई के अचल संपत्ति बाजार में विशेष रूप से भारतीयों नागरिकों द्वारा निवेश में हालिया बढ़ोतरी के पीछे यह सबसे महत्वपूर्ण कारणों में से एक है।

संयुक्त अरब अमीरात अचल संपत्ति में निवेश के लिए डेन्यूब प्रॉपर्टीज दुबई स्थित एक प्रमुख डेवलपर है जो निवेश पर 15 प्रतिशत तक की वापसी प्रदान करता है। डेवलपर्स न केवल अंतिम उपयोगकर्ताओं के लिए अच्छे घर प्रदान करते हैं बल्कि निवेशकों के लिए उच्चतम किराए पर ब्याज भी प्रदान करते हैं। वे उच्च अंत परिष्करण के साथ भी निर्माण करते हैं और विश्वस्तरीय सुविधाओं की सुविधा देते हैं।

डब्ल्यूईएफ रिपोर्ट ने संयुक्त अरब अमीरात के पयासों की सराहना की जो प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर नहीं है। व्यापार और अवकाश यात्रियों दोनों को आकर्षित करने के लिए एक अद्वितीय वातावरण बनाया है। इसलिए, संयुक्त अरब अमीरात विकास के एक नए चरण की सीमा पर है जो न केवल चार राजस्व के बेहतर हिस्से के मामले में तेल राजस्व की मात्रा पर भरोसा करता है, इसके बजाय, यह आर्थिक विविधीकरण की नीति के कार्यान्वयन के बाद गैर-तेल क्षेत्रों के विकास पर निर्भर करता है, जिसने हाल के वर्षों में महत्वपूर्ण क्षेत्रों में एक प्रभावशाली विकास किया है, जैसे पर्यटन, हवाई परिवहन, व्यापार और वित्तीय सेवाओं के साथ ही विनिर्माण और वैकल्पिक ऊर्जा के रूप में।

स्मृतियों में सुमन की सौरभ बिखेरते बालकवि

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

बालकवि बैरागी अचानक ही अपनी कोई दीठ दिये रविवार 13 मई को सबसे अलविदा हो गये। वे मल्हारगढ़ से एक पेट्रोल पम्प का उद्घाटन कर दिन को करीब तीन बजे लौटे। थोड़ा आराम करने की गरज से बिस्तर पर लेटे। इतने में नौकर चाय लेकर आया। आवाज लगाने पर वे न उठे न हिले तो वह सकपका गया। उनका बड़ा पुत्र मुन्ना भाई भी तब वहां नहीं था।

मेरा बालकवि बैरागी से 50 से अधिक वर्ष पुराना सम्पर्क रहा। वे तत्काल पत्र लिखते और उत्तर देते। ऐसे जीवन पर्यन्त अपने हाथ से उन्होंने हजारों पत्र लिखे जो कई तरह की जानकारियों से महत्वपूर्ण, मूल्यवान साहित्यिक धरोहर बन सकते हैं।

कई बार उन्होंने मुझे बताया कि प्रतिदिन यदि बस्ती से आटा मांगकर नहीं लाता तो घर में चूल्हा नहीं जलता इसलिए उन पर पहला लेख ही मैंने 'मंगते से मिनिस्टर' शीर्षक से लिखा

और इसी नाम से उन्होंने अपनी आत्मकथा का एक भाग तथा दूसरा भाग 'मिनिस्टर से मनुष्य' लिखा।

वे निरन्तर राजनीति में रहे पर उन्होंने अपने पर राजनीति कभी हावी नहीं होने दी। राजनीति का उनका घोड़ा सदैव अलग रहा। यही छवि उनकी साहित्य में भी बनी रही। साहित्य में भी कवि के रूप में उन्होंने अपनी अखिल भारतीय पहचान देकर कवि सम्मेलनों के माध्यम से बड़ा आदर, गौरव और प्रतिष्ठा अर्जित की।

उन्होंने स्पष्ट कहा कि वे शुरू से कांग्रेसी हैं और अन्त तक कांग्रेसी बने रहेंगे पर चिपकू और स्वार्थवादी कांग्रेसी नहीं। वे कभी दलबदलु नहीं रहे और न अपने को दलदल ही बनाया। बड़ी बुलंदगी से वे कहा करते - 'कांग्रेस मेरी मां है, उसी के मंचों पर एक कवि के रूप में मेरा जन्म हुआ किन्तु कांग्रेसी होना मेरा धंधा नहीं है। राजनीति मेरी रोजी रोटी नहीं है।'

उदयपुर में वे जब भी आये, मेरे से भेंट किये बिना नहीं रहे। समयाभाव में एकबार तो कविसम्मेलन में ही भारतीय लोककला मंडल के मंच पर उन्होंने मेरा नाम पुकारा और मिलने के लिए कहा। 12 जनवरी 1984 के पत्र में उन्होंने उसी कवि सम्मेलन का हवाला देते लिखा- 'जो कविता मैंने पढ़ी उसकी प्रशंसा में पचासों पत्र मेरे पास आये। मैं तो उन्हें पढ़-पढ़कर हैरान हूं। एक विद्यार्थी का पत्र बहुत ही मार्मिक था। वह लिखता है कि यदि उस रात वह मुझे नहीं सुनता तो शायद आत्महत्या कर बैठता। अब वह अनेक संघर्षों से जूझ रहा है। इस पत्र ने मुझे झकझोर दिया है। वहीं उदयपुर के आसपास का है। घर से भागकर, निराश होकर मरने जा रहा था।'

एकबार एक बड़े कविसम्मेलन में बैरागी को कांग्रेस का कवि कह दिया। इस पर वे झल्लाये और तत्काल जवाब हाजिर करते बोले- 'मैं कांग्रेसी कवि अवश्य हूं पर कांग्रेस का कवि नहीं। कविता मेरा संस्कार है, राजनीति मेरा कर्म। मैं कर्म छोड़ सकता हूं, संस्कार नहीं। कविता मेरे सिर की पाग है जबकि राजनीति पांव की पगरखी। कभी पाग की इज्जत के लिए जूती हाथ में लेनी पड़ी तो हिचकूंगा नहीं किन्तु पगरखी के कारण पाग हाथ में नहीं लूंगा।'

उनको बालकवि नाम मनासा की एक जनसभा में मुख्यमंत्री डॉ. कैलाशनाथ काटजू ने उनकी कविता से भावविभोर होकर दिया। यह घटना सन् 1952 की है। डॉ. काटजू ने उनकी कविता सुन मंच पर ही उन्हें माला पहनाई और कहा- 'मनासा जैसे छोटे कस्बे से उठकर यह बालकवि अपना और अपने गांव का नाम रोशन करेगा।'

पिछले वर्षों में उनका महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन के समारोह में निरन्तर आना रहा तो अवश्य मिले। हम लोग बाहर भी किसी विशिष्ट आयोजन में भी मिलते रहे। 11 नवबंर 2017 को जब बालकवि पार्श्वकल्ला मिलने आए तो लगभग डेढ़ घंटे तक उनसे हिंदी भाषा की दशा-दिशा, उसके संबंध, रोड़े-अवरोधक, वैश्विक स्वरूप तथा बदलते स्वरूप पर खुलकर बातचीत हुई।

उन्होंने कहा कि हिंदी पर लता मंगेशकर और भारतीय रेल का बड़ा उपकार है। एक ओर हिंदी गानों को सुनने के लिए अहिंदी भाषियों ने हिंदी सीखी वहीं भारतीय रेल ने हर प्रांत में हिंदी को बुलंद किया।

उन्होंने राजभाषा अधिनियम में वर्णित राजस्थान राज्य को क श्रेणी वाला बताकर कहा कि नियमानुसार यहां हर होर्डिंग, संकेतक पत्र, पत्र, आदेश आदि हिंदी में होने चाहियें।

हिंदी के प्रबल पक्षधर बालकवि अंग्रेजी से सदैव दूर रहे। यहां तक कि विदेशों में भी 18-20 देशों में घूमे मगर कहीं भी अंग्रेजी शब्दों का उपयोग नहीं किया। उन्होंने मीडिया के लोगों से भी आह्वान किया कि वे शुद्ध हिंदी काम में लें ताकि नई पीढ़ी संस्कारित हो सके।

उन्होंने अपने निर्माण में जिनकी मूल्यवान भूमिका रही, उनका स्मरण करते हुए कहा - मैं रामधारीसिंह दिनकर के वंश में पैदा हुआ और कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का एकलव्य हूं। पुरुषोत्तमदास टंडन, शिवमंगलसिंह 'सुमन' एवं भवानीप्रसाद मिश्र मेरे जीवन निर्माण की मुख्य धुरी हैं। महावीर अधिकारी, रवीन्द्र माथुर, राहुल बारपूते और धर्मवीर भारती ने मुझे गद्य लेखन में बहुत तवज्जो दी। मेरे पास लोगों के लिखे करीब एक लाख पत्र सुरक्षित हैं और मैं अब भी प्रतिदिन औसतन 20-25 पत्र लिखता हूं। मैं प्रतिदिन गीता का एक अध्याय पढ़ता हूं।

25 सितंबर 2011 को मैं, बालकवि बैरागी तथा डॉ. पूरन सहगल तीनों उज्जैन की प्रतिकल्पा नामक संस्था के निमंत्रण पर सांझीकला की एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेने गए। टेक्सी में बैरागीजी अपनी पुरानी स्मृतियों में खो गये। बताया कि सन् 1955 में ख्यातलब्ध लोककलाकार देवीलाल सामर मेरे घर मनासा आये तब उनके साथ भवाई नर्तक दयाराम और लोकगीत गायिका नारायणीदेवी थी। उसका कंठ बड़ा मधुर था। पहलीबार उसी से मैंने जला गीत सुना था। मैं रोमांचित हो उठा।

नारायणीबाई के गले में आज भी वही टीस, पीड़ और हिचकोला है।

जीवन के उत्तरार्द्ध में आपका मुख्य कार्य क्या है, पूछने पर बैरागीजी हंसते हुए बोले- 'लिखने को किताबों की भूमिका और करने को उनका लोकार्पण रह गया है। इस उम्र में लोग इसी काम के योग्य समझने लग गये हैं। पहले तो उन पोथियों को पढ़ो। बहुत सी तो पढ़ने जैसी भी नहीं होतीं फिर उन पर लिखो प्रशंसामूलक, ठकुर सुहाता। जो काम अब तक नहीं किया, उसे अब अनचाहे भी करना पड़ रहा है।

बैरागीजी की सर्वोत्कृष्ट अच्छाई यह है कि वे अपने अतीत जीवन को सर्वथा याद करते हुए धन्य बने रहते हैं। अपने रद्दड़ समझे जाने वाले बचपन को उन्होंने कभी हीन नहीं माना और गर्वशाली ही बने रहे। ऐसा व्यक्तित्व ही 'रोड़ी का रतन' तथा 'मंगते से मिनिस्टर' बनता है।

उन्होंने बताया कि बालपने के रेल के खेल में वे सबसे पीछे रहते थे कारण कि पीछेवाला हमेशा अपने आगेवाले का कमीज पकड़े रहता। बालकवि के पास पहनने को कमीज नहीं होता, केवल बनियान होता। सबसे पीछे रहने का यह

लाभ होता कि वे तो अपने आगेवाले की कमीज पकड़े रहते और उनके बनियान में पकड़ने जैसा कुछ नहीं होता तो वे सबसे पीछे रहकर गार्ड बाबू बन इठलाये रहते। उन्होंने सुन रखा था कि रेल में सबसे पीछे का डिब्बा गार्ड बाबू का होता है जो पूरी गाड़ी का संचालन करता है।

उन्होंने सदैव पारदर्शी जीवन जिया। विशिष्ट रहते हुए भी जब तक वे मंत्री रहे, उनका निवास हर साधारण का घर-आंगन बना रहा। उनके समय की कोई फाईल न कभी ठंडी हुई और न किसी ने लावा ही उगला। एकबार वे विक्रम विश्वविद्यालय के चांसलर डॉ. शिवमंगलसिंह 'सुमन' से मिलने साइकिल पर ही चले गये तब सारे देश के अखबारों में बड़ी खबर बनी।

बैरागीजी का यह सौभाग्य रहा कि वे तीनों सभाओं के सदस्य रहे। देश की लोकसभा, राज्यसभा तथा प्रदेश की विधानसभा में उनकी प्रशंसनीय, सकारात्मक यादगार भूमिका रही।

बैरागीजी का सर्वाधिक समय अपने नाम आई डाक को निपटाने का रहता। अपने पत्रों को वे स्वयं पढ़ते। स्वयं ही उनका अपनी हस्तलिपि में उत्तर देते। चिट्ठियों पर डाक टिकिट भी स्वयं लगाते और स्वयं ही उन्हें लेटर बॉक्स में छोड़ने जाते। कहने को यही उनका सर्वाधिक खर्चीला मुद्दा और व्यसन था। उन्होंने कभी किसी कोने से राजनीति में राजयोग ने कभी पीड़ित नहीं किया तो साहित्य में भी उन्होंने कोई शाही रोग नहीं पाला।

सम्प्रति संस्थान द्वारा 11 नवम्बर 2011 को आयोजित लोकगीतों की एक संगोष्ठी में जब मैंने कहा कि किसी का लिखा गीत चाहे वह वर्षों तक कवि सम्मेलनों में किसी कवि द्वारा सुनाया जाता रहे श्रोता भी बराबर उसकी मांग करने लगें तब भी वह लोकगीत नहीं हो सकता। किसी गीत में मात्र शब्द देना ही पर्याप्त नहीं है। स्वर भी मुख्य है। स्वर के साथ कोई थिरकन देता है। कोई संगीत देता है तो कोई उछाह-उल्लास में सराबोर हो उठता है। ऐसी स्थिति में धीरे-धीरे वह समूह की धरोहर हो जाता है। लोकमानस और लोकमनीषा की रजामंदी के बिना कोई गीत लोकगीत नहीं बनता।

तब मुख्य अतिथि के रूप में बालकवि बैरागी ने मेरे कथन का समर्थन करते हुए कहा कि बचपन में जब उनका विवाह हुआ तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि ससुराल में महिलाएं जो मांगलिक गीत गा रही थीं वह उन्हीं का लिखा हुआ था। उनके घर भी जब उनकी बनोली निकली तब उनके पीछे महिला समुदाय द्वारा जो गीत गाया जा रहा था- 'बनाजी की गलियों में आजे रे लखरा' वह भी उन्हीं का लिखा था।

बालकवि मानते थे कि जीवन को रसमय जीने के लिए लोकाश्रित होना परम आवश्यक है। उनकी दृष्टि में भाषा, भूषा, भवन, भोजन और भजन ही लोक की पहचान थी। लोक को सबसे बड़ा खतरा विज्ञान से मानते हुए उन्होंने कहा कि लोग अब फैशन के रूप में नूडल्स खाते हुए लोक की बहस करने लगे हैं। फक्कड़ मिजाज के बालकवि अच्छे कवि ही नहीं, अच्छे विचारक और लेखक भी थे। वे फकीराना अन्दाज के साथ कबीराना अन्दाज लिए स्वाभिमानी जिये। उनके अनेक पत्रों में एक पत्र मुझे अभी भी उनसे नहीं मिलने का अफसोस दिये है। उन्होंने लिखा- 'आप उदयपुर में नहीं मिले, यह मेरा निजी घाटा है। मैंने तो आपको पुकार तक पड़वाई थी। शायद आपने वहां मिलना उचित नहीं समझा।' अब वैसे हितैषी, प्रेरक, यादबाज, जिंदादिल मित्र कहां मिलेंगे।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।